ॐ

tMu vkj tkMu d fy,

कान्यकुब्ज वाणी

2017

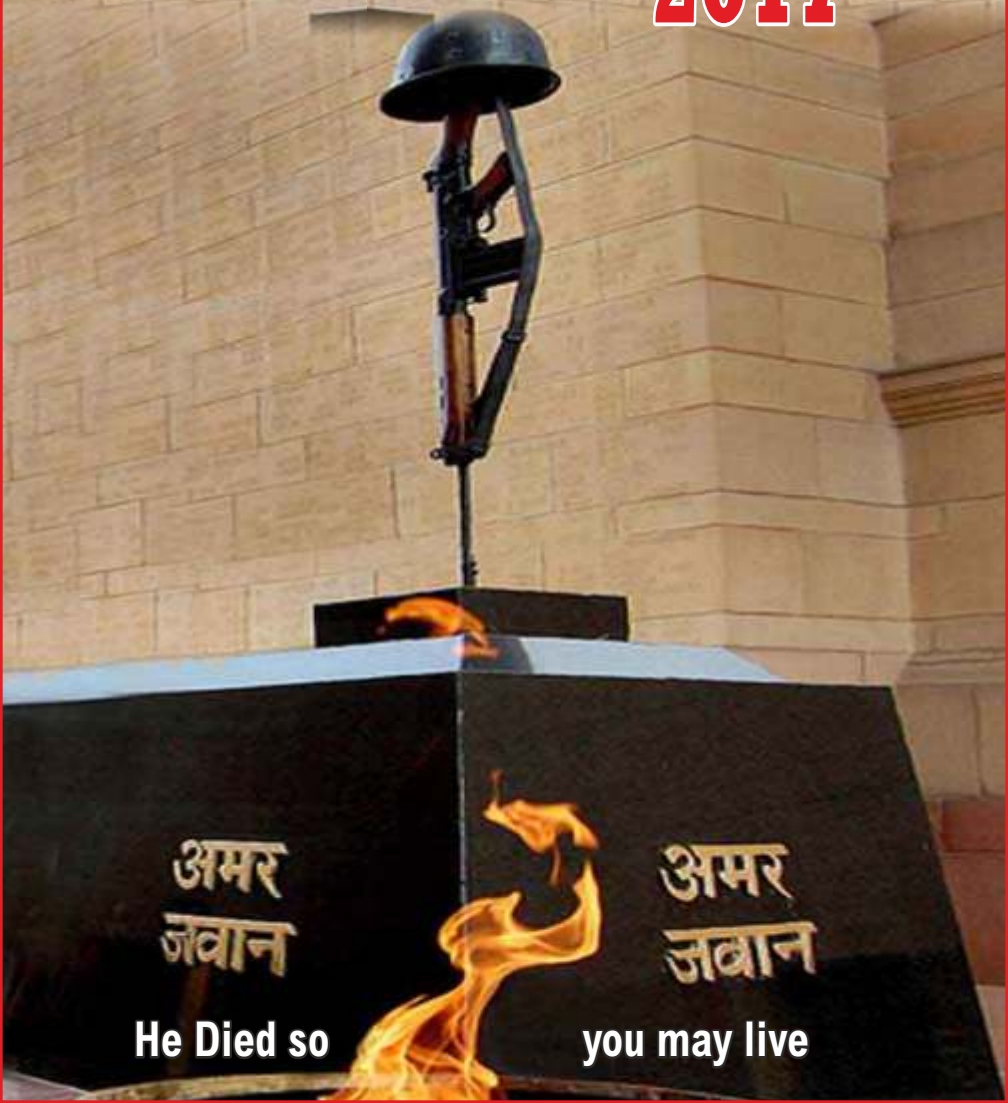

मुख्य अतिथि को माल्यर्पणा करते
जी एस मिश्र

स्वागत करते डॉ. डी.एस. शुक्ला

कान्यकुब्ज- रत्न सम्मान ग्रहण करती
साहित्यकार श्रीमती डॉ. नीरजा द्विवेदी

कान्यकुब्ज- रत्न सम्मान ग्रहण करते
प्रसिद्ध आई सर्जन डॉ. वी.के. मिश्र

खचाखच भरा प्रेक्षा गृह

वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते
महासचिव श्री उपेन्द्र मिश्र

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्।। भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अर्थ–

तीनों लोकों को अनुप्राणित करने वाले ईश्वर को हम अंगीकार (सारे अंगों में धारण) करते हैं और वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

- **ॐ** ब्रह्म का प्रतीक माना गया है।
- प्रणव–अनुप्राणित करने वाला (ब्रह्म से ही सारी सृष्टि अनुप्राणित है इस लिये इसे प्रणव कहते है)
- सविता–जन्म देने वाला– ईश्वर ही सबका जन्मकारक है।

गायत्री मंत्र संभवतः विश्व की सबसे कल्याणकारी प्रार्थना है। इसमें धन, यश, विजय, ज्ञान अथवा वंश–वृद्धि की कामना नहीं की गई, मात्र बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने की प्रार्थना की गई है।

जिस व्यक्ति की बुद्धि सन्मार्गी होगी वह अपना, अपने कुटुंब का ही नहीं पूरे विश्व मात्र का कल्याण करेगा।

इसीलिए गायत्री को 'वेद माता' और पंचम वेद माना जाता है।

•••

विषय सूची

1.	प्रार्थना	1
2.	होली	7
3.	आवरण कथा–जय जवान	8
4.	मौलाना के दिल की	13
5.	गुरु–शिष्य	15
6.	राष्ट्र के प्रति निष्ठा	19
7.	वर्षा जल संचयन	22
8.	उफ वो निगाहें	24
9.	जग रोया मैं हँसा	29
10.	कंत मनइयाँ	37
11.	कार्यकारिणी का फोटो	39
12.	पुरस्कृत छात्राएं	40
13.	साइकिल एवं नगद पुरस्कार	42
14.	जिनके सहयोग के हम आभारी हैं	43
15.	आभा मण्डल	44
16.	डी.एन. दुबे उवाच	49
17.	प्राकृतिक संवेग और स्वच्छता अभियान	52
18.	बिटिया	56
19.	मोतियाबिन्द तथा उपचार	58
20.	E-Transactions	60
21.	डॉ. निःशंक	65
22.	श्यामल काया गोरी छाया	70
23.	यादों की मुस्कान	73
24.	बलि का बकरा	74
25.	श्रद्धांजलि श्रद्धेय भाई साहब	76
26.	स्व. डॉ. विमल भट्टाचार्य	79
27.	पण्डित गेंदालाल दीक्षित	80
28.	मेम्बरशिप फार्म	83

■■■

अध्यक्षीय सन्देश

कान्यकुब्ज संस्था को पुनर्जीवित करके हम लोग अपने सभी भाई–बंधुओं को एकजुट करके विकास की तरफ ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। हम विशेषकर कन्याओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, ताकि हमारी स्त्री जाति शिक्षित होकर अपने तथा अपने परिवार को एकजुट करके विकास की तरफ उन्मुख करें। इस सम्बन्ध में हम लोगों के समक्ष आर्थिक बाधायें खड़ी होती हैं। अतः अब समय आ गया है जब हम लोगों को एक होना चाहिए। अधिक से अधिक लोग एक जुट होकर इस संस्था के उद्देश्यों के साथ संस्था को मजबूत करने में हमारी मदद करें।

इन शब्दों के साथ मेरी शुभकामनायें।

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी

6/168, विनीत खण्ड, गोमतीनगर,

लखनऊ–226010

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं0 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

सन्देश

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा की पत्रिका कान्यकुब्ज वाणी, आप सबके सहयोग, स्नेह एवं सौजन्य से शनैः शनैः प्रगति कर रही है एवं आपस में जुड़ने जोड़ने के उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर रही है। इसकी प्रगति, उन्नति एवं उत्कृष्ट सहृदयता में डा0 डी0एस0 शुक्ला का बहुत सराहनीय योगदान है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि यह निरन्तर समृद्धि के पथ पर अग्रसर रहे, एवं पल्लवित–पुष्पित होती रहे।

अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
कोषाध्यक्ष
एडवोकेट
हैदर मिर्जा रोड,
गोलागंज, लखनऊ
मो.9455708148

संपादकीय

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

गत वर्ष भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण रहा। जहाँ एक ओर मध्य–पूर्व में आतंकवादी संगठनों का पराभव होता दिखा, वहीं दुनिया के एक महत्वपूर्ण राष्ट्र के चुनावों के अप्रत्याशित नतीजे ने सबको चौंका दिया। जिस समय विश्व में धर्म, भाषा, रंग, संस्कृति में भेदभाव भुलाकर एकता का प्रयास हो रहा है, उसी समय विश्व के सबसे महत्वपूर्ण देश में इन विचारों से अलग भावना वाले राष्ट्राध्यक्ष का उदय आशंका पैदा करता है।

भारत में पुराने नोटों का प्रचलन बंद होने के कारण देश में काफी हलचल रही। भारत–पाक सीमा पर हिंसा और भारतीय सेना के ठिकानों पर आतंकी हमलों ने देशवासियों को चिंता में डाल दिया। किन्तु हमारी सेना ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद आतताइयों के मंसूबों को विफल कर दिया। हम उनके शौर्य और बलिदान की प्रतिपूर्ति तो नहीं कर सकते, परन्तु कृतज्ञता अवश्य प्रदर्शित कर सकते हैं। इसी भावना से इस वर्ष दीपावली पर्व में सभी घरों में पूजन के समय सेना के लिए प्रार्थना की गई। मोहल्ले की नागरिक समितियों ने शहीदों की स्मृति में दिये जलाए।

'कान्यकुब्ज वाणी' के इस अंक में भी वीरों के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिए 'आवरण पृष्ठ' को भारत के वीर सैनिकों को समर्पित किया तथा भारत–पाक सीमा पर 'वास्तविक नियंत्रण रेखा' पर जानकारी सम्मिलित की गई है।

कान्यकुब्ज परिवारों के कई सदस्य इस वर्ष हमेशा के लिए बिछुड़ गए। यह संख्या इतनी अधिक है कि इस अंक में निधन–सूचना के लिए अलग से स्थान देना पड़ रहा है। कान्यकुब्ज परिवार उन दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना करता है और परिवारी जनों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता है।

प्रस्तुत अंक में पं0 श्रीलाल शुक्ल जी की स्मृति में दो हास्य और व्यंग्य रचनाओं समेत विमुद्रीकरण से निपटने के लिए 'डिजिटल मुद्रा–विनिमय' (कैश लेस) के साधनों के बारे में जानकारी सम्मिलित की गई है।

आशा है कि संपादक मण्डल का यह प्रयास पाठकों को सुरुचि पूर्ण लगेगा।

होली एवं नए संवत्सर आगमन पर अनेकों शुभ कामनायें।

संपादक
(डॉ0 डी0एस0 शुक्ला)
18/378 इन्दिरा नगर, लखनऊ–226016
ईमेल–dsumeshdp@rediffmail.com

''होली''

रंगों का त्योहार है यह, हर रंग रंगो तुम होली में

नफरत की भाषा छोड़ के सब, खूब प्यार भरो तुम बोली में

यह देश विविधता भरा हुआ, हर जाति धर्म का रंग यहाँ

सब साथ साथ रहते आये, सदियों से सबका संग जहाँ

ऐसी सच्ची रस्मों का सब, खुलकर मिलकर सम्मान करो

गंगा जमुनी तहजीब का सब, एक स्वर में मिल गुनगान करो

मन खिल जायें दिल मिल जायें, सब मिलकर ऐसा व्यवहार करो

देश और दुनिया में अपनी, कौम का नाम बहार करो

आओ फिर रंग रंगे ऐसा, हर मन को जो रंग भा जावें

हर जन का सुख दुःख सबका हो, मिलजुल कर साथ निभा पावें

त्योहार सिखाते यही 'मृदुल', हर तरह रहे सौहार्द बना

होली दीवाली ईद बड़ा दिन, गुरुपर्व इसलिये बना

आओ ले चले सुखद सपने, हम अरमानों की डोली में

रंगों का त्योहार है यह, हर रंग रंगों तुम होली में।

रचयिता

शीतला प्रसाद पाण्डेय 'मृदुल'

डी1/146एफ, जानकीपुरम, लखनऊ

मो0 : 9696298482

आवरण कथा–जय जवान

• सम्पादक

बीसवीं शताब्दी के आरंभ से अहिंसक स्वतंत्रता संग्राम चालीसवें दशक में आते आते हिंसक होने लगा था।

इसके मूल में अंग्रेजों की 'बाँटो और राज करो' नीति थी।

महत्वाकांक्षी जिन्ना, जो कि राजनीति में गाँधी के पदार्पण से द्वितीय पंक्ति के नेता हो गए थे, राजनीति त्याग कर लंदन में वकालत करने लगे। भारत की स्वतन्त्रता निश्चित जान, स्वतन्त्रता आंदोलन में जातीयता के नाम पर हिन्दू मुसलमानों में फूट डालने के उद्देश्य से तत्कालीन गवर्नर जनरल ने डा0 इकबाल से जिन्ना को पुनः भारत की राजनीति में वापस आने का आमंत्रण दिया। जिन्ना को आश्वासन दिया गया था कि उनको राष्ट्राध्यक्ष बनाया जायेगा। इसके लिए एक पृथक राष्ट्र की भी धुँधली परिकल्पना भी बताई गई। इस प्रकार से भारत के विभाजन की नींव पड़ी, जिसने कि सदियों के हिन्दू–मुस्लिम सह–अस्तित्व को छिन्न भिन्न कर दिया। अहिंसावादी गांधी और नेहरू को हिन्दू मुसलमान की हिंसक झड़पों से आतंकित कर पाकिस्तान का सपना साकार किया गया।

श्री रैडक्लिफ, जो कभी भी भारत नहीं आए थे, उन्होंने नक्शे पर लाइन खींचते हुए अखंड भारत के तीन हिस्से कर दिये। यह भारत और, पाकिस्तान बाँटने वाली रेखा 'अंतर्राष्ट्रीय रेखा' बनी और 'रेडक्लिफ लाईन' के नाम से जानी गई।

भारत के तीन टुकड़े करने के बाद भी अंग्रेजों के मन का विष शमित नहीं हुआ। उन्होंने देश के और भी अधिक टुकड़े करने देने के उद्देश्य से एक धारा और सम्मिलित कर दी जिससे कि तत्कालीन सहस्राधिक रियासतें, अपनी स्वेच्छा से या तो भारत अथवा पाकिस्तान में सम्मिलित हो सकती थीं। उन्हें यह विकल्प भी दिया गया था कि यदि वे चाहें तो, स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में रहने को स्वतंत्र थीं। चर्चित का एक प्रसिद्ध वाक्य, जो उसने भारत विभाजन पर कहा था ''इट इज़ ओनली बाईफर्केशन आफ इंडिया। वी शैल सी फ्रग्मेंटेशन आफ इंडिया'' (यह तो मात्र भारत का द्विविभाजन है। हम भारत के टुकड़े–टुकड़े होता देखेंगे), से अंग्रेजों की दुर्नीति का पता चलता है। (चर्चिल भारत की स्वतन्त्रता और विशेष रूप से महात्मा गाँधी के विरोधी रहे)।

तत्कालीन भारत में कश्मीर और पाकिस्तान में बलोचिस्तान और पख्तूनिस्तान अपनी निजता अक्षुण्ण रख, स्वतंत्र रहना चाहते थे। पाकिस्तान

ने बलोच और पख्तून प्रांतों पर सेना द्वारा कब्जा कर लिया और कश्मीर पर भी आक्रमण कर उसे पाकिस्तान में मिलाना चाहा। कश्मीर के राजा ने अपने राज्य का विलय भारत में कर दिया। विलय–पत्र पर हस्ताक्षर के बाद कश्मीर भारत का अभिन्न अंग हो गया। इसके बाद भारतीय सेना ने कश्मीर में आक्रमणकारी पाकिस्तानी सेना का मुकाबला कर उसको पीछे धकेलना शुरू किया। भारतीय सेना भारत के थोड़े हिस्से को ही मुक्त करा पाई थी कि, अहिंसा के पुजारी गाँधी जी के दबाव में भारतीय नेताओं ने सेना पर जबरन युद्ध विराम थोप दिया। युद्ध विराम के बाद दोनों देशों की सेनाएं जहाँ जिस जगह तक काबिज थीं, वहीं एक रेखा बना दी गई जिसे 'युद्ध विराम रेखा' का नाम दिया गया। इस रेखा के पूर्व में भारत व पश्चिम में पाकिस्तान का अनधिकार कब्जा किया कश्मीर का भाग था जिसे आज भी 'पीओ के' (पाकिस्तान आकुपाइड कश्मीर) के नाम से जाना जाता है।

(मोटी लाइन–अंतर्राष्ट्रीय रैडक्लीफ रेखा, dotted line वास्तविक नियंत्रण रेखा, POK लिखा भाग पाकिस्तान द्वारा 1947 में हड़पा हुआ कश्मीर का हिस्सा है।)

1971 के युद्ध में पाकिस्तान की पराजय के बाद पूर्वी पाकिस्तान बांग्ला देश नाम से एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। 1972 में भारत, पाकिस्तान के बीच हुए 'शिमला समझौता' के बाद यह युद्ध विराम रेखा 'वास्तविक नियंत्रण रेखा' या 'एल ए सी' (लाइन आफ एक्चुअल कंट्रोल) के नाम से जानी जाने लगी।

युद्ध विराम रेखा के पश्चिम में बना 'पीओके' स्वतंत्रता के बाद से भारत के शरीर में नासूर की भाँति कष्ट दे रहा है।

1947 के हमले के बाद से अब तक पाकिस्तान ने इस कश्मीर को

कब्जाने के लिए 1965 और 1971 में भारत पर जबरदस्त हमले किए जिन्हें हमारे जवानों ने विफल कर दिया।

जनहानि

युद्ध	भारत	पाक
1947	2000	2000
1965	3000	3800
1971	2500–3000	9000
1999 कार्गिल	527	450

इसके अलावा पाकिस्तान के 91000 युद्धबंदी पकड़े गये जो कि महायुद्ध के बाद एक कीर्तिमान है। इन कैदियों को शिमला समझौते के बाद पाकिस्तान वापस किया गया था।

पाकिस्तान 1960 से बाहरी सहायता की वजह से बहुत तेजी से विकसित हो रहा था। 1965 के युद्ध में उसकी आर्थिक दशा तहस नहस हो गई, वहीं 1971 के युद्ध में पाकिस्तान का अंगभंग ही नहीं हुआ उसकी अंतर्राष्ट्रीय छवि को भी क्षति हुई। पाकिस्तान को आभास हो चुका था कि वह भारत से आमने–सामने के युद्ध में कभी विजयी नहीं हो सकता। अतएव उनके नेता ने भारत से 1000 वर्ष तक छद्म–युद्ध जारी रख भारत को क्षति पहुँचाने की शपथ ली, और भारत के विरुद्ध आतंकवाद का प्रारम्भ हुआ। तब से अब तक सबसे ज्यादा नागरिक और सैनिक इसी LOC पर मारे जा रहे हैं।

छद्म युद्ध या आतंकवाद में नष्ट जिंदगियाँ–1994 से 2016

(इण्टरनेट से साभार)

वर्ष	नागरिक	सैनिक	आतंकवादी	कुल
1994	1696	417	1919	4032
1995	1779	493	1603	3875
1996	2084	615	1482	4181
1997	1740	641	1734	4115

1998	1819	526	1419	3764
1999	1377	763	1614	3754
2000	1803	788	2384	4975
2001	1693	721	3425	5839
2002	1174	623	2176	3973
2003	1187	420	2095	3702
2004	886	434	1322	2642
2005	1212	437	1610	3259
2006	1118	388	1264	2770
2007	1013	407	1195	2615
2008	1007	374	1215	2596
2009	720	431	1080	2231
2010	759	371	772	1902
2011	429	194	450	1073
2012	252	139	412	803
2013	303	193	388	884
2014	407	161	408	976
2015	181	155	386	722
2016	30	29	123	182
योग*	**24669**	**9720**	**30476**	**64865**

रक्त रंजित **Loc** पर अब तक 65000 जानें जा चुकी हैं, जिनमें से लगभग 10000 भारतीय सैनिक हैं जिन्होंने हमारी रक्षा में अपने जीवन की आहुति दी। इन वीर सैनिकों को हम सब नमन करते हैं।

'कान्यकुब्ज वाणी' के इस अंक का मुख पृष्ठ इन्हीं वीर जवानों को समर्पित है।

अभी विभाजन की ही पीड़ा मन में कसक रही है,

जलती है केसर की क्यारी, झेलम सिसक रही है।

सरहद के बाहर से कोई इसको आग दिखाता,

कीमत अपनी सहिष्णुता की कितनी देश चुकाता।

—डा0 ओ0पी0 पाण्डेय

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322,0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

व्यंग्य

मौलाना के दिल की

• **योगेन्द्र शर्मा**
3/29सी, लक्ष्मीबाई मार्ग,
रामघाट रोड, अलीगढ़
मो0 : 09897410320

सफेद लखनउआ कुर्ता, चार खाने का तहमद, दुपल्ली टोपी पहने मौलाना सब्जी की दुकान पर मोल भाव कर रहे थे। बाँये हाथ से एक चुटकी तम्बाकू दांये हाथ में विराजमान पान में झोंकने की अदा से ही खाकसार उन्हें पहचान गया था।

तुमने उनसे लिखवा दिया, कुछ तो मैं भी लिख मारूँगा, सोचता मैं उनकी ओर लपका। थोड़ा आगे बढ़कर आदाब अर्ज किया। तो ऊपरसे नीचे नाप–तोल कर मुस्कराये, ''खुश रहो, वैसे बरखुदार बुढ़ापे की नजर है, बन्दा आपको पहचान नहीं पाया।'' मैंने परिचय दिया, ''हुजूर! मैं आपके यार, जनाब के0पी0 सक्सेना का चेला हूँ। आपके मोहल्ले में ही रहता हूँ, यहाँ से घर तक के रास्ते को काटने के लिए, हमें भी बताइये, कुछ अपने, कुछ मुल्क के हालात के बारे में।'' रास्ते में मौलाना से यूँ गुफ्तगू हुयी।

–भैय्ये! हाल का क्या कहें? सौ का नोट जेब में था, अल्लाह खैर करे पिच्यान्वे रुपये की यह जरा सी सब्जी आयी है, पाँच रुपये पान खर्च को बचा लिये। सरकार को तो महंगाई में ही मजा आ रहा है।

–मुल्क के हालात के बारे में आप क्या कहेंगे?

–भइये, बम धमाकों में लोग कीड़े–मकोड़ों की तरह मर जाते हैं। हम सिर्फ निन्दा करते हैं या अमेरिका का मुँह देखते हैं। इस पर भी सियासत हो रही है। राजीव गाँधी के हत्यारों को माफी दे दी जाये, वह बहुत बिजी हैं। किसी दूसरे बड़े नेता को लुढ़काना है उन्हें। अफजल गुरु को भी माफी दे दी जाये, उनके पाकिस्तानी आका, और दुश्मनी का उनका जज्बा सलामत रहे, उन्हें अफसोस है कि कार का विस्फोटक समय पर क्यों नहीं फटा? इंशा अल्लाह, अबकी बार संसद या कश्मीर विधान सभा की ईंट से ईंट बजा देंगे। उन्हें पकड़ने में जो सिपाही शहीद हुये, उन्हें सही श्रद्धांजलि यही है।

–नेता सोचते हैं कि आतंकवादियों से नर्मी बरतने से मुसलमान खुश होगा।

–याद है बरखुर्दार, कसाब के साथियों की लाशों के लिए मुम्बई के मुसलमानों ने अपने कब्रिस्तानों में जगह नहीं दी थी। मुसलमान के दिल की क्या पूछते हो बहुत खिसियाया हुआ है, हर कोई उसे आतंकी समझता है। सरकार के कमजोर पड़ते ही, पब्लिक आतंकियों से ही सुरक्षा की उम्मीद

लगा बैठती है। राजस्थान और म0प्र0 के इलाके जहाँ पुलिस कमजोर है, डकैतों की ही चलती है या नहीं? बाकी खुदा के घर में, सिजदे में झुके बन्दों को मारने वाला, क्या मुसलमान है?

–क्या इस मसले का कभी हल हो पायेगा?

–हल तो खुदा ही करेगा, सरकार सोचती है, कि आतंकी मारते–मारते खुद ही थक जायेंगे, तो सरेण्डर करने को उन्हें डीलक्स सुविधाऐं दे दी जायेंगी। हमारा होम मिनिस्टर कहता है कि आतंकवाद बड़ी समस्या है, लेकिन नक्सलवाद उससे भी बड़ी समस्या है। कुछ दिन पहले भतीजे सलीम ने कहा था कि अंग्रेजी बड़ी मुश्किल है, लेकिन गणित तो बहुत ही ज्यादा कठिन है। छमाही के नतीजे में बरखुरदार दोनों में फेल हो गया। मौलाना का घर आ गया था सिलसिला टूटा। वह अपने घर हम अपने घर।

■■■

पार्थ की होली की विश

यदि मैं एस्टरोनाट हो जाता तो, स्पेसक्राफ्ट में आता।

भर कर उसमें रंग–गुलाल अंतरिक्ष में जाता।

घूम–घूम सारी धरती को सरोबार कर जाता।

मम्मी, पापा, दीदी, दादू, मम्मू, नानी, चाची,

चाचा, मौसा, मौसी, नानू पर रंग की धार गिराता

काश ! मैं एस्ट्रोनाट हो जाता।

हैप्पी होली !

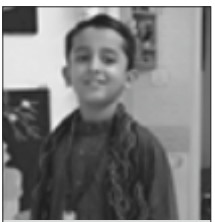

पार्थ शुक्ला आयु 7 वर्ष

गुरु शिष्य

• सूबे.मे. आर.एन. तिवारी

आज कुछ पन्नों में उस घटना का वर्णन करूँगा जिसने जीवन को नई दिशा दी। मैं एक अतिसाधारण परिवार से हूँ। कानपुर देहात के एक छोटे से गाँव के ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। जन्म के 8 महीने बाद माँ का और 3 वर्ष के बाद पिता का साया नहीं रहा। दो भाई और दो बहिनों के इस परिवार का पोषण करने वाले बड़े भाई मात्र 19 वर्ष के थे।

कुछ आर्थिक और कुछ उचित मार्गदर्शन के अभाव में भाई और बहनों की शिक्षा मात्र प्राइमरी तक ही हो पाई।

शैशवकाल से ही मुझे पाठशाला जाने का बड़ा चाव था। बच्चों को स्कूल जाते देख मन में अजब सा एहसास होता था। मैं भी उनके साथ चल देता था, कभी–कभी वह डाँट कर भगा देते और कभी कहते कि इंटरवल के बाद लौट जाना।

आखिरकार मेरा प्राइमरी स्कूल में दाखिला मिला। 1973 में 5वीं कक्षा में मेरा अपने परीक्षा–केंद्र (जिसमें लगभग 10–15 गाँव के बच्चे आते थे) के सभी बच्चों में द्वितीय स्थान आया, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आस–पास के लोग अब मेरा नाम जानने लगे थे और कई मित्र भी बन गए। कक्षा 5 तक मेरे पास खरीदी हुई अपनी कापी और किताब नहीं थीं।

कक्षा 6 में गाँव के इंटर कालेज में मेरा दाखिला हुआ। 16 जुलाई 1973 दाखिले का दिन मुझे अभी भी याद है। मेरे पिता तुल्य बड़े भाई (श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी) ने कक्षा 6 की किताबें, कापी और बैग खरीद कर दीं तो मुझे जो खुशी हुई उसको मैं लिख कर नहीं बता सकता। इस समय तक मेरी दोनों बहनों की शादी हो चुकी थी, और वे अपनी–अपनी ससुराल में थीं।

जब मैं तीसरी कक्षा में था तो मेरी बड़ी बहन ने मुझे खाना बनाने की तालीम देते हुए कहा, "भईया, खाना बनाना सीख लो, अगर मैं नहीं रही तो तब भी रूखा सूखा खा कर पेट भर लोगे।''

आज मेरी बहिन संसार में नहीं हैं। जब उनकी याद आती है तो मेरी आँखे आज भी नम हो जाती हैं।

समय किसी के लिए रुकता नहीं। मेरे बड़े भइया की शादी जब हुई,

भाभी घर में आईं तो पता चला परिवार क्या होता है।

गुजरते समय के साथ मैंने पी.सी.एम. ग्रुप से 12वीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास कर ली, उच्च–शिक्षा के लिए डीबीएस कालेज कानपुर में दाखिला तो मिल गया पर समस्या खर्चे की थी। आवास, आना–जाना, खाना सभी, जिसका गाँव में कोई मूल्य नहीं था, शहर में इन सबके लिए पैसा चुकाना होता है। मैंने दोस्तों से काम दिलाने को बोला जिससे पैसे की समस्या कुछ कम हो सके। पता चला पब्लिक स्कूल नौबस्ता (यह स्कूल आज महाविद्यालय है) में गणित के शिक्षक की जगह मिल सकती है। 90 रू. मासिक पर मैं साक्षात्कार के बाद सुबह 7–12 तक वहाँ पढ़ाने लगा और 1–5 अपराह्न खुद अपने कालेज पढ़ने जाता। मेरे एक मित्र रवीन्द्र तिवारी ने कहा कि उसके संज्ञान में एक अच्छा परिवार है वहाँ ट्यूशन मिल सकता है। 100 रू. महीने मिलेंगे और मेरा समय भी बच जाएगा। कहाँ 5 घंटे के 90 रु. और कहाँ एक घंटे का 100 । मुझे स्वाध्याय का काफी समय मिल सकता था। सो, मैंने हाँ कर दी।

जिस परिवार से मुझे मिलाया गया गया वह एक तिवारी जी थे जो बैंक में अच्छी पोस्ट पर थे। पति, पत्नी, दो बेटे और दो बेटियों का परिवार था। मेरे स्वाध्याय की लगन और संभवतः मेरे शिष्ट व्यवहार से वे बहुत प्रभावित हुए। मुझे उनके छोटे बेटे राजेश को गणित पढ़ाने का दायित्व मिला।

ग्रामीण परिवेश से आने की वजह से मेरा अंग्रेजी का ज्ञान बहुत अच्छा नहीं था अतएव मैं उसको हिन्दी में ही गाइड करता था। आत्मीयता होने पर एक दिन मैंने अपनी अंग्रेजी की कमज़ोरी राजेश के साथ शेयर की। उसने बड़ी सरलता से कहा, "सर, कोई बात नहीं 'How to write correct English' नाम की बहुत अच्छी अंग्रेजी सीखने की एक किताब मेरे पास है, आप उसे ले कर प्रैक्टिस करें। आप जैसा मेधावी व्यक्ति तो एक महीने में ही सीख लेगा। मेरा यह छात्र मात्र नवीं कक्षा में ही था पर उसने मेरी कितनी बड़ी मदद की यह मैं ही जानता हूँ।

राजेश का पढ़ने का तरीका, व्यवहार, अनुशासन, समय का ध्यान रखना, सब कुछ बहुत अच्छा था। यह सब गुण मैंने उसी से सीखा, क्योंकि मुझे गाइड करने वाला तो दूर–दूर तक नहीं था।

एक दिन उसने मुझसे शेयर किया कि यदि कोई बच्चा एक सवाल (गणित का) 40–50 बार हल नहीं करता तो वह 70% या अधिक मार्क्स नहीं ला सकता। मैं दंग रह गया! अभी तक मैं मात्र 8 या 9 बार ही एक सवाल को हल करता था। मेरे पूछने पर उसने बताया–

"जो चैप्टर आज स्कूल में पढ़ाया जाना है उसे पढ़ कर जाओ, स्कूल में उसके रफ नोट्स तैयार करो, घर आ कर उसे फेयर करो। हफ्ते में प्रत्येक रविवार को दुहराओ।"

मेरी समझ में आ गया कि साल के 52 हफ्तों में 50 से अधिक बार revision हो जाएगा। ज्यादा समय भी नहीं लगेगा और परीक्षा में सारे सवाल बगैर ज्यादा सोचे स्वतः हल होते जाएंगे। कोई भी प्रश्न नहीं छूटेगा।

उसी दिन से मैंने अपने छात्र को अपना गुरु मान लिया और उसी के पदचिह्नों पर चलना प्रारम्भ कर दिया। नतीजा जहाँ मेरे पहले 40–50 प्रतिशत मार्क्स आते थे वही एमएससी फाइनल में मैं 69 प्रतिशत से उत्तीर्ण हुआ। 87 में 'सेना शिक्षा कोर' में 'वरिष्ठ अनुदेशक' के पद पर चयनित हो गया।

मेरा शिष्य, जिसे मैं मन से गुरु मान चुका था 12वीं कक्षा के बाद उसी साल ही आईआईटी में सेलेक्ट होगया। आज राजेश अमेरिका में है। उसकी सफलता से मैं भी अपने को गर्वान्वित अनुभव करता हूँ।

कुशाग्र या मेधावी होना ही सफलता के लिए पर्याप्त नहीं है, पढ़ने का एक सलीका और अनुशासन होता है, जिससे आप साधारण से असाधारण बन सकते हैं। यही बात मैंने अपने शिष्य राजेश से सीखी।

राजेश की बातों का ध्यान रख कर मैंने सर्विस के दौरान ही B.Ed. M.B.A. P.G.D.R.D. तिब्बती भाषा में डिप्लोमा किया और सभी में 70 प्रतिशत से अधिक नंबर अर्जित किए। Small Business Entrepreneurship में तो outstanding परिणाम पाया।

राजेश की बताई शिक्षा को अपने बेटे पर लागू किया। वह आज सेना में अधिकारी है।

मैं वर्तमान में '4' राजपूत बटालियन के साथ गुरुदासपुर (पंजाब) में पोस्टेड हूँ और मेरी पत्नी 'रोली तिवारी' आर्मी पब्लिक स्कूल में अध्यापन कार्य कर रहीं हैं।

(श्री तिवारी जी वर्तमान में सेना से स्वैच्छिक सेवा–निवृत्ति लेकर स्वयं की कोचिंग चला रहे हैं।)

■■■

अखिल भारतीय
कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा
और
कान्यकुब्ज वाणी

को
होली एवं नवसंवत्सर
की
हार्दिक शुभकामनाएं

कांट्रेक्टर : राजकुमार
मो.9839993100

राष्ट्र के प्रति निष्ठा

• जितेंद्र कुमार त्रिपाठी

ईरान के दक्षिण पश्चिम प्रांत पारस के निवासी जोरोआस्ट्रियन लोग पारसी नाम से भी जाने जाते हैं। पवित्र–सिद्ध–भविष्यवक्ता या जोरोआस्टर द्वारा उपविष्ट धर्म जोरोआस्ट्रियनिस्म है। अरबों द्वारा ईरान की विजय के पश्चात् जोरोआस्ट्रियन समुदाय तेजी से घटा; क्योंकि ईरान के अधिकांश जोरोआस्ट्रियन, इस्लाम में परिवर्तित कर दिये गए थे। इन जोरोआस्ट्रियन या फारसी लोगों में से मुट्ठी भर लोग ईरान छोड़ कर 8वीं सदी में भारत में शरणार्थियों की भाँति भारत के पश्चिमी तट पर आए और संजन के राजा से उनके राज्य में स्थायी रूप से रहने की अनुमति चाही। राजा की अनुमति की कहानी को एक गीत में रचा गया और 'गुजराती गर्बा' के रूप में (समवेत गीत और नृत्य), जो हर्ष के विभिन्न अवसरों पर सम्पन्न किये जाते थे, उसको गाया गया था। उसका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है।

जाधव राणा ने सभी नागरिकों को एक खुले मैदान (गोचर) में एकत्र होने की एक घोषणा जारी की। बहुमूल्य वस्त्रों से आच्छादित एक सिंहासन पर राजा ने अपना आसन ग्रहण किया। वह राजसी वेषभूषा पहने थे, एक शानदार साफा और कढ़ाई के काम युक्त मखमल के चप्पल पहने थे। उनके चारों ओर उनके श्वेत–वस्त्रधारी–घुड़सवार– अंगरक्षक चमकते भालों को पकड़े पंक्ति में चल रहे थे।

जाधव राणा के एक संकेत पर पारसी शरणार्थी सभा के केंद्र में लाये गए। पवित्र अग्निकुंड एक छोटी अफरधान पकड़े हुए उनका शिथिलकाय वृद्ध पुरोहित एक दुभाषिये के माध्यम से दल के लिये प्रवक्ता था।

"वह क्या है जो तुम हमसे चाहते हो, ओ बहुत दूर भूमि से आये अपरिचितों" जाधव राणा ने पूछा।

''आराधना की स्वतन्त्रता महाराज" वृद्ध पुरोहित ने उत्तर दिया।''

"स्वीकृत, और क्या चाहिये तुम्हें?"

"अपने बच्चों को स्वयं की परंपराओं के अनुसार और रीतियों से पाल–पोस कर बड़ा करने की स्वतन्त्रता।"

"स्वीकृत, और क्या चाहिये तुम्हें?"

"भूमि का एक टुकड़ा जिस पर हम खेती कर सकें, जिससे जिन लोगों के बीच हम रहें उनके लिये हम भार न हो।

"स्वीकृत, प्रतिफल में तुम क्या करोगे अपने अंगीकृत देश के लिये?"

वृद्ध पुरोहित ने पीतल का एक प्याला दूध से भरने, और सभा में लाने को कहा। यह कर दिया गया, तब उसने एक चम्मच शक्कर प्याले में हिलाई, और उसे अपने काँपते हुए हाथों से पकड़े हुए कहा–

"क्या कोई आदमी दूध के इस प्याले में शक्कर देखता है?"

सब ही ने सिर (नकारात्मक) हिला दिये।

"महाराज" पुरोहित ने कहा, "आपकी मानवीय दयालुता के लिये हम दूध में शक्कर की इस अकिंचन मात्रा की भाँति होने का प्रयास करेंगे।''

भीड़ में से अनुमोदन की फुसफुसाहटें थीं। तब पुरोहित के एक संकेत से, सभी शरणार्थी–पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चों ने भूमि पर पूरी लंबाई में साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। प्रत्येक ने मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और अपने मुखों से नीचे लुढ़कते अश्रुओं के साथ उन्होंने उसे मस्तक और आँखों पर दबा कर लगा लिया। आज भी पारसी समुदाय अपनी उस प्रतिज्ञा पर दृढ़ है। उन्होंने इस देश के पहनावे और यहाँ की भाषा को अपनाने तथा अपने धर्म–प्रचार द्वारा यहाँ के लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित न करने का आश्वासन दिया। आज भी पारसी समुदाय से बाह्य वैवाहिक सम्बन्धों को मान्यता नहीं दी जाती है। नियम–पालन में कठोरता यहाँ तक है कि अपने से इतर समुदाय में वैवाहिक संबंध से जन्मी सन्तानें कभी पारसी मान्य नहीं होतीं, पारसियों के अग्निमंदिर प्रवेश नहीं कर सकतीं हैं, न ही पारसी समुदाय के अंग हो सकते हैं। यही नहीं संकर जाति में जन्मे लोग किसी अन्य पारसी के देहावसान पर उसकी अन्त्येष्टि यात्रा में सम्मिलित नहीं हो सकते। वह केवल अन्य किसी के घर से, दूर से शव–यात्रा देख सकते हैं।

इस समुदाय का मानना है कि पारसी महिलाएं कुछ अधिक ही स्वतंत्र होती हैं, क्योंकि लड़कियों का पालन–पोषण लड़कों के साथ–साथ, उनके समकक्ष और समान ही होता है। लड़कियाँ विवाह के लिए इस समानता को त्यागने को उन्मुख नहीं होतीं। फलतः, वह एकाकी जीवन व्यतीत करती हैं अथवा अधिक आयु बीत जाने के बाद ही विवाह करती हैं। जबकि भारत के हिन्दू धर्म की अधिक शिक्षित महिलाये विदेशों में जाकर अपनी प्रतिभा पूर्ण विकसित होने के लिए विवाह का सहारा लेने को उन्मुख होने लगी हैं।

पारसियों के विशिष्ट गुणों के बारे में – जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे सर्वोत्तम प्राप्त करने के लिए प्रयनशील है यथा उद्योग, व्यापार, विधि, कानून, संगीत, दर्शन, दानशीलता, खान–पान, फिल्मी कास्मोपालितन प्रकृति।

टाटा, गोदरेज, वाडिया, मिस्त्री, होमी जहांगीर भाभा, दादाभाई नौरोजी आदि ने देश में अग्रणी स्थान सदैव बनाए रखा, और देश की प्रगति में पूरा सहयोग किया।

अपने समुदाय की बहुत कम संख्या होने पर भी, अनुपातनतः भारत के सर्वांगीण विकास में इनका योगदान अग्रणी रहा।

■■■

As we grow older, and hence wiser, we slowly realize that-

Wearing a $300 or $30.00 watch they both tell the same time

Whether we carry a $300 or $30.00 wallet/handbag the amount of money inside is the same.

Whether we drink a bottle of $300 or $10 wine the hang over is the same.

Whether the house we live in is 300 or 3000 sq.ft. loneliness is the same.

You will realize, your true inner happiness does not come from the material things of this world.

Whether you fly First, Business or Economy class, if the plane goes down you go down with it.

Therefore I hope you realize, when you have mates, buddies and old friends, brothers and sisters, who you chat with, laugh with, talk with, have sing songs with, talk about north-south-east-west or heaven & earth, That is true happiness!!

■■■

वर्षा जल संचयन

• **डॉक्टर अनुराग तिवारी,**

आजीवन सदस्य कान्यकुब्ज सभा, लखनऊ
सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग
पी.एस.आई.टी. कालेज आफ इंजीनियरिंग,
भौंती, कानपुर– 208309

प्रकृति में जल तीन प्रकार से पाया जाता है। वर्षा जल (वर्षा के माध्यम से), सतह जल (तालाब, नहर एवं जलाशयों में उपस्थित जल) एवं भूगर्भ जल (जमीन के नीचे)। इन तीनों के माध्यम से प्राप्त जल का उपयोग पशु, पक्षी एवं मानव अपने जीवन के निर्वाहन एवं प्रगति के लिये करते है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों से मानव जनसंख्या एवं औद्योगिकीकरण के बढ़ने से प्रकृति में उपलब्ध इस जल स्रोत का अत्यधिक दोहन हुआ है. परिणाम स्वरूप भूगर्भ जल का स्तर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में मानक बिन्दु से नीचे की तरफ लगातार गिर रहा है। सतह पर पाये जाने वाला जल प्रदूषित हो चुका है एवं जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा जल की उपलब्धता में भी कमी आयी है।

'प्राकृतिक जल' प्रकृति की एक अनमोल धरोहर है जिसे मानव ने अपने एवं औद्यौगिक विकास के लिये पूरी तरह से उपयोग किया है जिसके परिणामस्वरूप यह प्राकृतिक स्रोत अत्यधिक दोहन होने के कारण आने वाले कुछ वर्षों में समाप्ति की ओर बढ़ रहा है।

देश एवं प्रदेश के अधिकांश शहरी क्षेत्रों में पेय जल आपूर्ति मुख्यतः भूगर्भ जल पर निर्भर है। परिणाम स्वरूप इस प्राकृतिक स्रोत (भूगर्भ जल) का अनियंत्रित दोहन होने से भूगर्भ जल के स्तर में निरन्तर गिरावट हो रही है जिससे भूगर्भ जल स्ट्रेटा अत्यधिक दबाव में आ गये है। धीरे–धीरे कम हो रहे इस स्रोत को बचाने के लिये वर्षा जल संचयन एवं रिचार्जिंग एक बेहतर, सुरक्षित एवं प्रभावी विकल्प है।

बारिश के पानी को एकत्रित एव संग्रहित करके किसी लाभकर/फलदायी कार्य करने की पद्धति को वर्षा जल संचयन कहा जाता है। वर्षा जल संचयन के मुख्य तीन घटक होते है। प्रथम–पानी को इकट्ठा करना, द्वितीय–उसे किसी जगह तक ले जाना एवं तृतीय–उस जल का संग्रहण करना।

आजकल अधिकांश शहरों में शहर नियोजकों द्वारा भूगर्भ जल के लगातार गिरते एवं कम होते स्तर को देखते हुए वर्षा जल संचयन से संबंधित कानून बना कर उनका अनुपालन सुनिश्चित कराया जा रहा है, इस स्थिति

को देखते हुये सरकार द्वारा वर्षा जल संचयन एवं रिचार्जिंग को सभी शहरी क्षेत्रों में नई बनने वाली सभी इमारतों में स्थापित करना अनिवार्य कर दिया है। सामान्यतः वर्षा जल संचयन छतों पर एकत्रित कर उसे पाइप के माध्यम से जमीन पर बने रिचार्जिंग पिट में संग्रहित कर देने से वह वर्षा जल धीरे–धीरे भूगर्भ जल मे मिल जाता है जिससे भूगर्भ जल स्तर मे गिरावट नही होती है।

वर्षा जल संचयन को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते है

1. रूफ टाप रेन वाटर हारवेस्टिंग
2. पुराने वर्षा जल संग्रहण जल संरचनाओं का पुनरुद्धार
3. माइक्रो कैचमेन्ट वर्षा जल संचयन
4. कुओं एवं जलाशयों के लिये रिचार्ज की विधा

वर्षा जल संचयन निम्न प्रकार की विधियों पर आधारित है प्रथम–परंपरागत विधि, यह विधि ग्रामीण क्षेत्रों मे प्रचलित है जहाँ वर्षा जल को परंपरागत तरीके से गाँव में स्थित तालाबों, जलाशयों, एवं कृषि हेतु उपयोग के लिये बने बडे जलाशयों मे संग्रहित करते है। द्वितीय प्रकार की विधि के अन्तर्गत कृत्रिम तरीके से वर्षा जल का रिचार्ज पिट में संचयन, खुले हुए कुओं मे वर्षा जल का संग्रहण, परकोलेशन पिट एवं बोर वेल एवं स्टोरेज टैंक मे वर्षा जल का संग्रहण सम्मिलित है।

वर्षा जल संचयन के निम्न लाभ है

1. वर्षा जल संचयन अन्य प्रकार के जल सोतो के लिये एक अच्छा पूरक है जिससे कि अन्य प्रकार के जल स्रोतों पर दबाव कम हो जाता है।
2. वर्षा जल संचयन आपात्काल में एवं प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सुरक्षित पानी की आपूर्ति प्रदान करता है।
3. वर्षा जल संचयन शहरों में बाढ़ आने का खतरा, जल निकासी एवं बाढ़ की स्थिति को कम करता है।
4. वर्षा जल संचयन प्रौद्योगिकियाँ लचीली एवं कम लागत वाली होती है। जिनमे आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जाना सरल होता है

वर्तमान मे जनसंख्या के बढ़ने के साथ–साथ शहरी क्षेत्रों में शुद्ध पानी की उपलब्धता एवं पर्याप्त आपूर्ति एक कठिन कार्य है। ऐसी स्थिति मे वर्षा जल संचयन द्वारा भूगर्भ जल के गिरते हुए, स्तर को रोकने के साथ–साथ अन्य प्रकार के जल स्रोतों पर भी दबाव कम किया जा सकता है।

उफ, वो निगाहें !

• **दीपाली,अहमदाबाद**

(लोग समझते हैं कि हमारे बच्चे अच्छी आय, सुख सुविधाओं के लिए हमसे दूर चले जाते हैं। उन्हें बूढ़े माँ–बाप कोई ख्याल नहीं रहता। पर क्या यह सही है ? – **संपादक**)

गर्मियों की छुट्टियाँ, सात वर्षीय बेटा खिलौना–कारों के कलेक्शन के लिए जूते के डिब्बों से मल्टीलेवेल पार्किंग बनाने में लगा था। माँ, पति के आफिस जाने के बाद के गृहकार्य में व्यस्त थी। सभी कुछ आम ग्रीष्म अवकाश में मध्यवर्गीय परिवार का दृश्य। तभी एकाएक कालबेल बज उठी। आम घरों में प्रेस वाला, काम वाली बाई और मेहमानों के आने का एक निश्चित समय होता है। पर इस समय कौन.? माँ बेटे दोनों के चेहरे पर अचरज के भाव उभरे। फिर भी माँ काम छोड़ कर दरवाजा खोलने चली। बेटे की निगाहों ने माँ का अनुसरण किया। माँ ने सेफ्टी चेन लगा कर दरवाजा खोला। अरे यह क्या...? वह सन्न रह गई.। उसने फुर्ती से दरवाजा खोला, उसका पति 'व' खून से लथपथ खड़ा था। शर्ट, पैंट, जूते, हाथ सभी में खून लगा था। यदि हाथ से दरवाजा न पकड़ा होता तो गिर जाती। उसके घुटने एकाएक कमजोर पड़ गये। बेटा भी चीख कर चिल्लाया, ''अरे। पापा को क्या हो गया ?''

महिलाएं चेहरे के भाव समझने में अधिक सक्षम होतीं हैं। लोग अपनी माँ या पत्नी से अपने मन के भाव नहीं छिपा पाते। पत्नी को संभलने में देर नहीं लगी क्योंकि 'व' के चेहरे पर दर्द नहीं था मात्र अवसाद ही दिखाई पड़ रहा था। वह आश्वस्त हुई, साथ ही 'व' ने आगे बढ़ कर अपने बेटे को सांत्वना दी। उसने बताया कि पापा एकदम ठीक है। उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। रास्ते में एक्सीडेंट से घायल एक अंकल की सहायता करने में उसके कपड़े घायल के खून से सन गए। वह तो मात्र अपने कपड़े बदलने आया है। बेटा आश्वस्त हुआ, पत्नी साँई बाबा को प्रणाम कर 'व' के लिए पानी ले कर आई। 'व' ने महसूस किया कि उसे प्यास लगी है जो कि तेजी से घटते घटनाक्रम की वजह से वह महसूस ही नहीं कर पाया था।

एक तरफ पत्नी दूसरी तरफ बेटा। दोनों उसको देख रहे थे। थोड़ी देर के बाद 'व' स्वाभाविक होने के बाद परिवार को देख कर मुस्कराया। पत्नी ने

हाथ सहलाते हुए कहा, "क्या हुआ ? कैसे हुआ ? कुछ बताओ भी।''

''मैं रोज की तरह आफिस जा रहा था। रास्ते में काफी ट्रेफिक था। हर कोई जल्दी आफिस पहुँचना चाहता। यह सोचते हुए मैं 'सोला ओवरपास' पर पहुँचा ही था कि वहाँ पर एकत्र भीड़ पर नजर पड़ी। बाइक धीमी कर देखा कि एक एक्सीडेंट में दो लोग सड़क पर घायल पड़े थे। एक युवक था वहीं दूसरा व्यक्ति उमरदार लग रहा था। युवक तो उठ कर बैठ चुका था, शायद उसके कंधे और पैर में चोट आई थी।

बुजुर्ग औंधे मुँह सड़क पर पड़ा था। उसके सिर में चोट लगी थी जिससे खून बह कर सड़क पर फैला हुआ था। मैंने बाइक स्टैंड पर खड़ी करी और एकट्ठी तमाशबीन भीड़ में से एक से कहा कि इन्हे अस्पताल पहुँचाना चाहिए। उसने लापरवाही से मोबाइल पर बात करते कहा कि 108 पर एंबुलेंस को सूचना मिल गई होगी। मेरे मन में दुविधा जागी, सोचा इस पचड़े में पड़ने से आफिस के लिए लेट हो जाऊँगा, तभी मेरा हाथ बाइक के पेट्रोल टैंक से छू गया। टैंक धूप की गर्मी से गर्म था। मेरा हाथ जल सा गया। मुझे एकदम से ध्यान आया कि यह लोग देर से सड़क पर पड़े है। अहमदाबाद की भयानक गर्मी से जलती हुई सड़क से यह कहीं जल न जाएँ, मैंने तत्काल बुजुर्ग को सीधा किया। शायद लोग किसी के पहल की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे बढ़ते ही दो लोगों ने आगे बढ़ कर सहारा दे कर युवक को फुटपाथ पर बैठाया। वह दर्द से कराह रहा था।''

''बुजुर्ग शायद बेहोश था या 'शाक' (सदमे) में था। सीधा होते ही उसने आँख खोली। चारों ओर देखने के बाद उसने मुझे देखा। मेरा शरीर काँप गया। उसकी नजरों में दर्द, घबराहट, और बेबसी थी। मुझ पर दृष्टि केन्द्रित होते ही चेहरे पर याचना और आशा के भाव उमड़े। उसे तिनके का सहारा मिलने की संभावना दिखी होगी। बुजुर्ग के आगे से बाल कम हो चुके थे, कनपटी के बाल सफेद। होंठ उम्र के लिहाज से मोटे, पर....उसकी आँखों में ऐसा क्या था जिसने मुझे ऊपर से नीचे तक झकझोर दिया ! मैं उसे गोद में उठा कर बीचो–बीच सड़क पर आ गया। बुजुर्ग को गोद में लिए मेरे बीचोबीच सड़क पर आ जाने से आती हुई कार को मजबूरन रुकना पड़ा। एक ने कार का पिछला गेट खोला। मैंने बुजुर्ग को पीछे सीट पर लेटा कर कहा "बाबू जी, घबराइए नहीं, मामूली चोट है। अभी अस्पताल पहुँच कर सब ठीक हो जाएगा।'' उसके होंठ हिले पर आवाज नहीं निकली।

तभी घायल युवक भी लंगड़ाता हुआ कार के पास आ गया जिसे लोगों ने आगे कि सीट पर बैठा दिया।

कार वाले ने बड़ी चिंता के साथ पूछा," इन्हे कहाँ ले जाना है? मैं इस शहर के लिए नया हूँ।''

"यहीं आगे सरकारी अस्पताल है, वहीं पहुँचा दीजिये तो शायद इनकी जिंदगी बच जाय। आपकी कार के आगे–आगे मैं अपनी बाइक से चलूँगा। आप केवल मुझे फालो करते हुआ आ जाइये'', कह कर मैंने अपनी बाइक स्टार्ट की।

"अभी तक असंवेदनशील बनी पब्लिक को जैसे चेतना आ गई। कार के आगे मेरी बाइक के चलते ही सभी ने तालियाँ बजा कर मेरा और कार वाले का अभिनंदन किया। मगर मेरा ध्यान केवल उस वरिष्ठ जन की सुरक्षा पर था। मैं आगे आगे आगे चल पड़ा।

इमरजेंसी के पोर्टिको में पहुँचते ही तत्काल स्ट्रेचर उपलब्ध हो गया। घायल युवक को व्हीलचेयर व बुजुर्ग को स्ट्रेचर पर लिटा कर चिकित्सा–कक्ष की ओर ले चले।

तब तक बुजुर्ग काफी कुछ आश्वस्त हो चुके थे। उन्हें लगा होगा कि अब वह ठीक हो कर अपने परिवार से फिर मिल सकेंगे। मैं उनके साथ स्ट्रेचर पर हाथ रखे चल रहा था। एकाएक बुजुर्ग ने मेरा हाथ पकड़ कर गुजराती में कुछ बोला जिसे मैं समझ नहीं सका। मैंने झुक कर पूछा "जी?"

"थैंक यू सन" कह कर उन्होने मुझे बड़े प्यार से देखा।

"उनकी वह निगाह... वह निगाह मुझे फिर जानी पहचानी लगी। ओह ऐसा मुझे क्यों लग रहा था!"

पत्नी ने देखा 'व' के होंठ अचानक सुबकने की मुद्रा में गोल हुए, ठोढ़ी कँपकपाई और वह तेजी से दोनों हाथों से मुँह ढाँप कर सिसकता हुआ तेजी से लिविंग–रूम में गया और दरवाजे को अंदर से बंद कर लिया।

बेटा परेशान हो गया। माँ से पूछा " पापा रोने क्यों लगे?"

माँ ने बच्चे को लिपटाते हुए कहा,"तुम्हारे पापा को उन दादा जी की चोट याद आ गई।"

लगभग पंद्रह मिनट बाद 'व' रक्त से सने कपड़े बदल कर, हाथ मुँह धो कर बाहर निकला। चेहरे पर जबरदस्ती की मुस्कान थी पर आँखें अभी भी लाल थीं और आँसू ढलकने को बेचैन। पत्नी ने कोई प्रश्न नहीं किया। कभी प्रश्न न करना भी बहुत आश्वस्त करता है। कुछ देर के बाद पत्नी ने 'व' का हाथ पकड़ कर पूछा, " एकाएक तुमको क्या हो गया? बुजुर्ग तो तुम्हारी वजह

से अब सुरक्षित हैं। फिर यह आँसू क्यों?"

'व' ने पत्नी और पुत्र को बाँहों में समेटते हुए कहा "अब समझ में आया वह निगाह और शब्द मुझे क्यों आंदोलित कर रहे थे। उन बुजुर्ग की निगाह में मुझे लगा जैसे पप्पा मुझे देख रहे हों और कह रहे हों "थैंक यू सन"। कह कर वह फिर चुप हो गया।

इस बार पत्नी भी इमोशनल हो गई उसे भी सुदूर रहने वाले अपने पिता का चेहरा याद आ गया।

कुछ देर बाद पत्नी ने सहज होते हुए कहा " 'व' पप्पा यह घटना सुनकर यही शब्द बोलेंगे "थैंक यू माई सन"।

कुछ रुक कर "और वह निगाहें.....! 'व' हर पिता जब अपनी औलाद को देखता है तो उसकी निगाह में एक सा ही वात्सल्य और स्नेह होता है"।

"शायद तुम सही कह रही हो"। कह कर उसने बड़े लाड़ से अपने बेटे को देखते हुए सीने से चिपटा लिया।

पश्चादुक्ति – बच्चों की अपनी मजबूरी है। फिर भी, वहाँ रह कर भी, वह अंजान लोगों में अपनों को तलाशते हैं।

■■■

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

जग रोये मैं हँसा'

• डॉ० डी०एस० शुक्ला

बहुत नाजों से चूमा उसने लबों को मेरे बिछड़ते वक्त,

कहने लगे कि मंजिल आखिरी है रास्ते में कहीं प्यास न लग जाय।

सेवा निवृत्ति के बाद से सुबह जल्दी उठ कर मार्निंग वाक पर जाने की आदत डाल ली थी। पर सुबह उठने में बहुत आलस्य होता था। मन कहता था उठो, शरीर कहता थोड़ा और सो लो। मन और शरीर के इसी ठेलमपेल में आधा घंटा निकल जाता। जब उठता तो लगता 'स्टीम नहीं बनी'। फिर भी उठता, काफी बनाता तब कहीं निवृत्त हो कर वाक पर जा पाता। जाड़ों में यह ऊहापोह और बढ़ जाती। पर आज तो उठते ही बड़ा हल्का सा लगा, फूल की तरह! कोई आलस्य नहीं सो तत्काल ही प्रातः भ्रमण को निकल पड़ा। दरवाजा और गेट भी नहीं खोलना पड़ा। शायद पत्नी रात में बंद करना भूल गई। वह बिचारी भी क्या करे, दिन भर गृह कार्य में चूर–चूर हो जाती होगी। मैं तो क्लिनिक के बहाने 11 बजे निकल लेता। उसे ही घर देखना पड़ता है। इस सहानुभूति के भाव के साथ मैं चल पड़ा। आज बहुत ऊर्जित महसूस कर रहा था, लगता जैसे जमीन पर पैर ही न पड़ रहे हों। काफी देर घूमा पर कोई थकान नहीं! यह सोच ही रहा था कि एकाएक मुझे पत्नी के जोर से चीखने की आवाज सुनाई दी। मैं तत्काल घर आ गया। पर इतनी त्वरा से! इस स्पीड से तो 'चपला हू चकित' हो गई होगी।

देखा पत्नी स्लीपिंग गाउन में थी और किसी से लिपट कर रो रही है। मैं अचरज में था कि मेरे बेड पर कौन लेटा है। मैंने सांत्वना देने के लिए उसके सिर पर हाथ रखा। मेरे स्पर्श का उस पर कोई असर नहीं हुआ। तभी पत्नी का हाथ हटने से बिस्तर पर पड़े उस व्यक्ति का चेहरा दिखा.....अरे यह तो मैं हूँ! मैं अपनी ही पत्नी को अपने ही शरीर से लिपट कर बिलखते देख रहा हूँ! उसके स्पर्श का न मुझे भान हो रहा है न ही मेरे स्पर्श को वह महसूस कर पा रही थी। तो...तो....क्या मै....'देही' हो गया!

जिसे अंग्रेजी में कहते हैं "आई वाज शाक्ड", मैं खड़ा नही रह सका। बैठ गया। एकदम से फिर खड़ा हो गया। मैं एक दम निराधार बैठा था। आश्चर्य हुआ लेकिन तत्काल ही हँसी आ गई। मन ने कहा अब भौतिक शरीर की

आदतों से बाहर आओ। अब तुम आत्मा हो। यह भान होते ही मन हल्का हो गया।

अब तक पत्नी की चीखों का पड़ोस पर असर होने लगा। लोग घर के बाहर निकल कर आहट लेने लगे कि चीखें कहाँ से आ रही हैं। जब सब को पता चला आवाज मिसेज शुक्ला की है, लोग दौड़े, काल बेल बजने लगी, दरवाजा पीटा जाने लगा। नीचे आफिस के कर्मचारी भी आ गए। मेरी सास के बेहोश होने पर इन्हीं कर्मचारियो ने बेटे का हाथ बँटाया था। कुछ देर बाद कालबेल और दरवाजे के शोर का भान पत्नी को हुआ। दुपट्टा डाल कर आँसू बहाती हुई उसने दरवाजा खोला। सामने खड़े पड़ोसी डाक्टर डॉ. जोशी से बोली, "देखिये डाक्टर साहब को क्या हो गया !''

डॉ. जोशी ने परीक्षण के बाद कहा, "कुछ नहीं बचा। डेथ हुए भी एक घंटे से ऊपर हो गया। शायद सोते में ही हार्ट अटैक हुआ।"

सभी लोग सहम गए। महिलाएं पत्नी को सांत्वना देने लगीं। कुछ ने कहा, "भाभी जी बेटों को खबर कर दीजिये।"

पत्नी, "बच्चों को कैसे कह पाऊँगी कि पप्पा नहीं रहे?" उसने अपने भांजे अनु को फोन किया। "भईया तुम्हारे मौसा जी नहीं रहे" वह अभी सो ही रहा था। नींद में उसे समझ नहीं आया या, वह इन शब्दों पर विश्वास नहीं करना चाहता था। मगर 'आती' के रोने से अनहोनी का आभास हो गया।

"आती, हम लोग अभी आ रहे हैं।"

अब तक उसकी पत्नी भी जाग चुकी थी। महिलाएं ज्यादा संवेदनशील होती हैं। उसने कहा, "डैडी–मम्मी को एकदम से यह सूचना मत देना" और काफी बनाने चली गई। खाली पेट जाना ठीक नहीं।

अनु ने डैडी से बताया,"डैडी, आती का फोन आया है। मौसा जी की तबीयत खराब है। आई सी यू में भर्ती हैं। आप चलेंगे?''

डैडी एकदम हतप्रभ हो गए। तत्काल अपनी पत्नी को कहा, "आशा, जल्दी से उठो डॉ. साहब की तबीयत खराब है। आई सी यू में भर्ती हैं। हमलोगों को चलना चाहिए। रानी अकेली होगी।"

आशा तैयार हो रही थी, मगर जाने क्यों उनकी आँखों के आँसू नहीं थम रहे थे। उन्हें कुछ अनहोनी का एहसास हो रहा था था। वह कुछ अनिष्ट सपना ही देख रहीं थी।

सब लोग गाड़ी में बैठे। सुप्रिया बच्चे को सोते ही उठा कर गाड़ी में बैठ

गई। गाड़ी जब सहारा अस्पताल की तरफ न जा कर दूसरी तरफ मुड़ी तो डैडी ने पूछा,''क्या बलरामपुर अस्पताल में भर्ती हैं डाक्टर साहब।"

अनु कुछ नहीं बोला ड्राइव करता रहा। जब गाड़ी इन्दिरा नगर की ओर मुड़ी तो मम्मी ने व्याकुल हो कर कहा, "हम लोग इन्दिरा नगर किस लिए जा रहे हैं?''

"मौसा जी घर पर ही हैं" अनु ने काँपती हुई आवाज में कहा।

अब सब को असलियत का पता चल गया। सभी शोकमग्न हो गए। आशा खिड़की से बाहर झाँकने लगीं, जैसे बस चले तो उड़ कर बहन के पास पहुँच जाएँ।

घर पहुँचने पर पड़ोसी एकत्र थे। सभी ने इनको सहानुभूति की नजरों से देखा। ऐसे में तटस्थ लोग चेहरा पढ़ने का प्रयास करते हैं कि किसके चेहरे पर कितना दुख है। कुछ तो बेबसी में मातमी सूरत बना कर आते हैं।

अंदर का नजारा देखते ही सबका सब्र का बाँध टूट गया। बहन ने रोते हुए छोटी बहन को गले से लगा लिया। भाईसाहब (डैडी) ने एक निगाह डाल कर मृतक के सिर पर हमेशा कि तरह हाथ रख कर आशीर्वाद दिया। हालाँकि वह जानते थे कि डाक्टर साहब आशीष या आलोचना से परे हो चुके थे। फिर भी उन्होंने आदतन आशीर्वाद दिया.....'ओल्ड हैबिट्स डाई हार्ड'।

अनु ने सबसे पहले अपने बड़े भाई बबलू (पीयूष) को सूचना दी, क्योंकि बबलू मौसा जी से बहुत अटैच्ड था। सामान्य होकर पीयूष की पहली प्रतिक्रिया, "सोनू, मनु (पुत्रों) को सूचना हुई कि नहीं?"

"पता नहीं भईया समझ नहीं आ रहा किससे पूछूँ ? आती का तो हाल बेहाल है।"

"उनसे पूछने की जरूरत नहीं। तुम मनु को बताओं मैं सोनू को बताता हूँ। हाँ, मैं फौरन पहुँचने की कोशिश करता हूँ।" पीयूष ने फोन काट दिया।

सोनू के मोबाइल की घंटी बजी। वह सो रहा था, बेटी भी सो रही थी। बहू भगवान के सामने पूजा कर रही थी। दो पूरी रिंग जाने के बाद सोनू ने उठाया, "क्या है बब्लू दादा, आपको नींद नहीं आती क्या?"

पीयूष उसके मजाक को अनसुना करते हुए गंभीरता से बोला " मौसा जी की तबीयत खराब है, हालत अच्छी नहीं है तुम जल्दी लखनऊ पहुँचो।"

अर्ली मार्निंग फोन सोनू को सदैव आतंकित करते हैं। सभी लोग जानते

हैं कि सोनू देर तक सोता है, प्रोफेशनल काल्स भी 9 बजे के बाद ही आते हैं। सोनू सन्न रह गया। बीमारी की सूचना मम्मू अथवा पप्पा स्वयं देते। पर सूचना बबलू दादा से मिलना किसी बड़े अनर्थ का संकेत था।

सोनू अपने पप्पा को काफी गौर से आब्जर्व करता था और सीखता था। उसे याद आया कि बाबा की मृत्यु पर पप्पा के चेहरे पर कष्ट तो था फिर भी कितने शांत बने रहे थे। एक बार आगे का पूरा कार्यक्रम निश्चित कर, सभी निकट संबंधियों को सूचित करके ही एकांत में फफक कर किस तरह रोये थे। सोनू ने सोचा कि अब सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है सो मुझे स्वयं को शांत एवं संयत रखना होगा। मगर संयत रहना इतना आसान है क्या ? अनचाहे ही उसके आँसू निकल पड़े। वह झट से उठा हाथ–मुँह धोकर, सोती बेटी के सिर पर हाथ फेर कर बाहर निकला। पत्नी चाय बना रही थी। सोनू ने किचन में ही बताया, "बबलू दादा का फोन था, पप्पा बीमार हैं....."कह कर उसकी गला न चाहते हुए भी रुँध गया। गरिमा ने गैस बंद कर दी। मुड़ कर पूछा, "बबलू दादा क्या लखनऊ में ही हैं ?''

सोनू "पता नहीं" फिर सामान्य होने का प्रयास करते हुए बोला, "तुम चाय बनाओ, बैठ कर शांति से सोचते हैं।" वह सोच रहा था कि मनु को भी सूचित करना चाहिए...पर छोटा भाई एकदम से व्यथित न हो जाए, वह स्वयं को संतुलित कर लेना चाहता था....तब तक मनु का ही फोन आ गया।

मनु भी बिस्तर पर ही था। अनु ने बताया कि पप्पा मौसा नहीं रहे, जल्दी लखनऊ पहुँचो। पहले मनु को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे समझ ही नहीं आया वह क्या करे। इस सूचना का प्रथम निश्चेतक प्रभाव हटने के बाद वह कंबल से सिर ढँक कर रो पड़ा। रोते में उसका मस्तिष्क एकदम सुन्न था। शोक का एक ज्वार निकल जाने के बाद वह उठा आँखें धोईं और दीपाली से बोला, "लखनऊ चलना है। पप्पा की तबीयत खराब है। अनु दादा का फोन आया था।''

दीपाली चिंतित होते हुए, "क्यों क्या हुआ?अभी कल ही तो फोन पर कितने अच्छे से बोल रहे थे!''

"अनु दादा से मैंने इतनी बहस तो की नहीं", मनू के स्वर में इरिटेशन था। दीपाली को स्थिति का कुछ भान हुआ। कुछ देर बाद बोली, "भईया से बात हुई?"

मनु–"तुम जल्दी से तैयारी करो। मैं भईया से बात करके जल्दी से जल्दी निकलने का इंतजाम करता हूँ।''

"हाँ, मनु।"

"भईया, कुछ सूचना मिली?"

"हाँ, पप्पा की तबीयत खराब है। बबलू दादा का फोन आया था। हमलोग चलने की तैयारी कर रहे हैं।"

थोड़ी देर तक दोनों तरफ से सन्नाटा रहा। शायद दोनों अपने दर्द को एक दूसरे से छिपाने के लिए अपने को संयत कर रहे थे।

मनु, "भईया, तुम अपने एजेंट से प्लेन के 6 टिकट बुक करने को बोलो। यदि यहाँ से नहीं तो बड़ौदा से बुक करा लो।''

सोनू, "हाँ, देखता हूँ। सबसे पहले एक या दो टिकट हो जाए तो यह लोग तो नेक्स्ट फ्लाइट से भी आ सकते हैं।" कह कर सोनू ने फोन रख दिया। दोनों भाई एक दूसरे का सहारा पा कर कुछ सुकून महसूस कर रहे थे। तभी बबलू का फोन फिर आया।

सोनू ने अच्छी खबर की आशा से फोन उठाया पर "सोनू मैं चेन्नई से दिल्ली होते हुए लखनऊ पहुँचूँगा। तुम्हारा क्या प्रोग्राम बना?" बबलू की आवाज कोई सांत्वना नहीं थी।

"दादा हमलोग प्रयास कर रहे हैं, हो सकता है दिल्ली में आपसे मुलाकात हो सके।''

तभी एक झटके से मैं अपने भौतिक शरीर के पास लौट आया। बार बार मैं क्यों इस जीर्ण शरीर के पास आ जा रहा हूँ। मुझे सबका रोना देखा नहीं जाता। मैं कहीं दूर चला जाना चाहता हूँ। पर नहीं मैंने बड़े गौर से देखा... एक बहुत ही पतली नीली प्रकाश–रश्मि से मैं अपने भौतिक शरीर की नाभि से जुड़ा था। यही 'रश्मि–बंध' मुझे शरीर से विलग नहीं होने दे रहा था। आत्मीयों के दुख की पीड़ा झेलना भी संभवतः 'शरीरी' की नियति होती है। फिर मुझे याद आया कि एक क्षण पहले मैं अहमदाबाद में अपने पुत्रों के घर के घटनाक्रम देख रहा था, दूसरे ही क्षण लखनऊ कैसे पहुँच गया.....! याद आया मैं अब पदार्थ (मैटर) नहीं रहा इसलिए प्रकाश कि गति से अपने मोह–बंधन के कारण इधर उधर विचर रहा हूँ। वाह.....मरने के बाद बाद भी आइंस्टीन के थ्योरी याद है। मैं मुस्कुराया। मैं परशुराम की तरह इच्छा गति हो चुका था (इच्छानुसार भ्रमण करने की शक्ति)।

अनु का बेटा अब तक जग चुका था। वह मुझसे काफी अटैच्ड था। मुझे देख कर पहले तो हमेशा की तरह शर्मा कर माँ से लिपटा, फिर मेरा कोई रेस्पान्स न देख उसने तर्जनी से मेरे गाल को छू कर मुझे आकर्षित करने का प्रयास किया। दादी ने कहा, "देखो भईया से बात करना चाह रहा है।"

मेरी पत्नी ने उसे खींच कर सीने से लगा लिया। इस भोले स्नेह प्रदर्शन से सभी की आँखों में एक बार फिर आँसुओं का ज्वार आया। मेरा मन भी भीग गया। मैंने प्रार्थना की कि यदि मेरे थोड़े भी सत्कर्म हों तो हे ईश्वर! इस बालक पर वाग्देवी कृपालु हों !

कुशू को देख मुझे गुनी और विभु की याद आई। मैं अपनी इच्छा–गति से तुरंत अपनी तीसरी पीढ़ी के पास पहुँच गया। गुनी लड़की होने की वजह से समझदार थी, और विभु से बड़ी भी थी। उसको अनहोनी का कुछ कुछ आभास हो चुका था। उसकी आँखों में आँसू थे। हो सकता है उसने ओवरहियर कर लिया हो। वहीं विभु अभी बहुत भोला था। एकदम इस उम्र में अपने पिता की तरह। माता पिता को शोकाकुल देख माँ से पूछा, ''मम्मा आप सब रो क्यों रहे हो? हमलोग एकदम से लखनऊ क्यों जा रहे हैं। अबकी तो लखनऊ जाने का कोई प्रोग्राम ही नहीं था।''

माँ," हाँ बेटा, तुम्हारे दादू की तबीयत खराब है। तभी हम लोग जा रहे हैं।"

"दादू अच्छे आदमी हैं, वह अच्छे हो जाएंगे," विभु ने माँ को सांत्वना दी। वह अपनी माँ को दुखी नहीं देख सकता था।

''भगवान करे बेटा तुम्हारी बात सच हो। कह कर माँ ने प्यार से उसे चिपका लिया

अनु का मोबाइल बजा। सोनू था, ''अनु दादा पप्पा के मोबाइल पर जितने कान्टैक्ट हो उन्हें एसएमएस कर इस घटना की सूचना दे दीजिये। हम लोग शाम तक पहुँच रहें हैं।''

मैसेज करके अनुने मोबाइल रखा ही था कि वह फिर बज उठा। डॉ. जुबेरी की आवाज थी, "कैसे और कब हो गया यह सब ?"

अनु–''अलसुबह सोते में ही। किसी को पता ही नहीं चला।'' तभी बाबी और बिक्कू (पुत्र समान चचेरे भाई) की भी काल आने लगी। अनु ने इग्नोर किया। जुबेरी साहब से बोला,"जी सर।''

डॉ. जुबेरी,–''डॉ. शुक्ला साहब अपने बाद अपनी आँखें दान करना

चाहते थे। यह जिम्मेदारी मुझे सौंप गये थे।" फिर कुछ रुक कर, ''भाभी जी तो इस कंडीशन में ही नहीं होगी कि कुछ बता सकें। बेटे कहाँ हैं ?"

''उनको सूचना मिल गई है, पर इतनी दूर से आने में कुछ समय तो लगेगा।''

डॉ. जुबेरी–''ठीक है मैं एक घंटे बाद फोन करता हूँ। डा. साहब की आखिरी ख्वाहिश पूरी होनी चाहिए,।''

रिंग फिर बजी। बबी का फोन था,'' कौन बोल रहा है?

''मैं अनु हूँ चाचा।,

''तुम पहुँच गये, बहुत ठीक। हम और बिक्कू भी पहुँच रहे हैं।''

मन, बुद्धि, कर्मफल ही प्रारब्ध रूप में मुझ देही के साथ जायेंगे।

एकाएक सुगबुगाहट हुई, नेत्र दान हेतु टीम आ गई। परिवार वाले कुछ विचलित हुए, पर मृतक की इच्छा का सम्मान करना ही था। सबको हटा दिया गया। आँख की झिल्ली (कार्निया) सुरक्षित कर ली गई। विकृति से बचाने के लिए आँखों में पलकों के नीचे एक प्रोस्थेसिस रख दी गई जिससे आँखों का स्वाभाविक उभार मेंटेन रहा। विचार आया क्या मैं किसी दूसरे की आँखों से अपने परिचितों को देख पहचान सकूँगा। शायद नहीं। कार्निया तो कंटेक्ट लेंस की भाँति है। इसमें स्मृति नहीं होती।

बच्चों को प्लेन मिल गया था पर साँझ होने के पहले नहीं आ सकते था। सो शरीर फ्रीजर–काफिन में सुरक्षित कर दिया गया। काफी देर हो चुकी थी। आत्मीय आते जा रहे थे, उनके आगमन के साथ शोक और क्रंदन का ज्वार फिर से उमड़ता। यह क्रम चलता रहा। मैं कुछ नहीं कर सकता था सो बोर होने लगा। वाकई बगैर किसी एक्शन के मात्र दृष्टा बनना बड़ा उबाऊ होता है। सोचने लगा जो पत्नी घर लौटने जरा भी विलंब होने पर व्याकुल हो जाती, फोन पे फोन करने लगती, अब कैसे धीरज रखेगी? अपना पूरा ध्यान रख पायेगी? फिर सोचा तुम पहले व्यक्ति तो नहीं हो जिसकी मृत्यु हुई हो, जैसे सब रह लिए वैसे यह भी रह लेगी। गुजरते समय के साथ विस्मृति जीवन को सामान्य करती है। रेलगाड़ी चलती जाएगी, मुझे यहीं पर उतरना

था। लंबी दूरी के टिकट वाले दूर जायेंगे पर रेलगाड़ी चलती रहेगी। यही नियम है।

साँझ हो चुकी थी तभी फोन आया कि बच्चे लखनऊ एयरपोर्ट पर पहुँच गए हैं। एक घंटे में पहुँच जायेंगे। सबको कुछ सांत्वना तो हुई पर, बेचैनी एक बार फिर बढ़ गई।

मुझे याद आया कबीर की 'वह दुनिया मेरे बाबुल का घर' कविता पर किसी शायर ने लिखा–

तू भी घर को चली, मैं भी घर को चला।

फर्क इतना सा था, तू उठ के गई मुझे उठाया गया।

लोग अब अन्त्येष्टि स्थल पहुँचने वाले थे। मुझे सब जाना पहचाना लग रहा था। कितनी ही बार अन्यों की अंतिम यात्रा में मैं सम्मिलित हो चुका था। अब कंधों पर जाने की मेरी बारी थी। अर्थी को जमीन पर रखा गया। कुछ परिचित वहाँ पहले से मौजूद थे उन्होंने भी प्रणाम किया। कुछ मुझसे ज्येष्ठ भी होंगे। कोई फर्क नहीं पड़ता मुझे पूर्वजों में स्थान मिल चुका था।

शरीर विद्युत दाह प्लेटफार्म पर अर्थी समेत रखा जा चुका था। मन में घर का हाल जानने की इच्छा हुई पर.... यह क्या मैं जहाँ का तहाँ ही रहा..... मेरी इच्छा–गति समाप्त हो चुकी थी! मेरी रश्मि नाल बहुत छोटी हो गई थी। मैं बंधन महसूस कर रहा था। तभी आवाज आई, ''ज्येष्ठ पुत्र इनके बंधन खोल दे।'' बड़े बेटे ने अर्थी की रस्सियाँ खोलीं, छोटे ने सहायता करी। अब कुछ राहत महसूस हुई। अंतिम दान के बाद सभी ने फिर प्रणाम किया। प्लेटफार्म स्लाइड किया और मैं दहन कक्ष में आ गया। एकाएक मेरे शरीर से लपटें उठने लगीं। चारों ओर प्रकाश छा गया। शरीर भस्म हो गया। मेरी रश्मि–नाल अदृश्य हो गई। मैं स्वतंत्र हो गया.....केवल प्रकाश ही प्रकाश....

फिर जैसे मैं बहुत बड़े वैकुएम द्वारा बड़ी तेजी से कहीं खीचा जा रहा था.....

'अन्यानि संयाती नरोपराणि'

मैं नवीन शरीर धारण करने चल पड़ा।

■■■

'कन्तमनईयाँ कौड़ी पईया'

• नीरज शुक्ला 'रानी'

कन्तमनाइयाँ कौड़ी पईया, कौड़ी लै मैं गंग चढ़ायों,
गंगा मोहिका बालू दीन। बालू लै मैं भुर्जी क दीन,
भुर्जी मोहिका लावा दीन। लावा–लावा मैं चबावा,
टोर्री मैं घसियारे क दीन। घसियारा मोहिका घास दीन,
घास लै मैं गइया क दीन। गइया मोहिका दुद्दू दीन,
दुद्दू लै मैं खीर पकावा– थोड़ी बाबा का दीन,
थोड़ी दादी का दीन, थोड़ी भैया का दीन,
थोड़ी–थोड़ी, खीर सबको दीन

यहाँ तक कि नौकरों चाकरों पालतू तोता गाय को बाँटने के बाद बची–खुची हम खावा कह कर बच्चा घुटनों पर से एक ओर गिरा दिया जाता था। बच्चा प्रसन्न हो कर खिलखिलाता था, और झटपट उठकर फिर से कंतमनइयाँ कराने के लिए घुटने पर लेट जाता था।

यह बाल–मनोरंजन हमारी पीढ़ी ने अपने बच्चों के साथ (जो कि अब स्वयं बच्चों वाले हो गए) जरूर खेला होगा। पहले के बाल–मनोरंजक खेल, किस्से–कहानियों में एक जीवनोपयोगी संदेश होता था,जिसको बच्चा शैशव अवस्था से सीखना शुरू कर देता था। शिशु को खिलाते समय का यह लोक–गीत भी दुनियादारी की सीख से भरा है। इसमें विनिमय से व्यापार का संदेश छुपा है। किस प्रकार से बच्चे को खेलते समय एक कौड़ी मिलती है उस कौड़ी से, जिसका कोई मोल नहीं था, वह सुस्वादु खीर का प्रबंध कर लेता है। इस गीत की यह बात भी गौर तलब है कि कोई चीज मुफ्त नहीं है। गंगा की बालू भी बच्चा श्रद्धा–पूर्वक गंगा कौड़ी को अर्पित करने के बाद ही लेता है। उसके बाद वह जरूरतमन्द लोगों से विनिमय करता हुआ, बीच मे लावा चबाता हुआ (Profit लेता हुआ) अपनी व्यापारिक बुद्धि से दूध लाकर घर में खीर पकाता है। खीर पक जाने के बाद उसका उपभोग वह केवल स्वयं ही नहीं करता बल्कि सेवकों, परिवार के सदस्यों, यहाँ तक कि पालतू जीवों को तृप्त करने बाद ही खुद खाता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के अलावा एक सुविकसित वाणिज्यिक देश भी था। विभिन्न देशों के लोग यहाँ व्यापार करने आते थे। कृषि–उत्पाद,

वस्त्र, श्रंगार सामग्री, और धातु से बने सामान, यहाँ तक कि अस्त्र–शस्त्रों का निर्यात हाट था। तब यह देश सोने की चिड़िया माना जाता था। तमाम आक्रांता आए, लूट कर चले गए। कुछ आतताई प्रवृत्ति छोड़ कर यहीं के हो गए। परंतु बनिया अंग्रेजों ने यहाँ की सम्पदा, उद्योग, और कारीगरों को खूब exploit किया। उन्होंने इंग्लैण्ड में भारत में बने वस्त्रों पर मुनादी लगा दी, भारतीय वस्त्रों की होली जलायी और अपने माल को जबरदस्ती भारत में ठूँसा। प्रतिस्पर्धा खत्म करने के उद्देश्य से यहाँ के धंधों को चौपट कर दिया, यहाँ के कारीगर उनके मजदूर हो गए और प्राकृतिक सम्पदा कच्चे माल के रूप में इंग्लैण्ड जाने लगी। आने वाली पीढ़ियों में गुलामी ही सबसे बड़ा उद्योग हो गया। चाहे वह कृषि हो, व्यवसाय हो या सरकारी नौकरी। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधि होने के नाते सरकारी नौकर दर्जा का यहाँ के व्यवसायी, राजे–महाराजों से ऊपर हो गया (superiority of bureaucracy)। इसी की वजह से आज के प्रतिभावान युवा की आकांक्षा वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर, या व्यवसाई न हो कर नौकरशाह बनने की होती है। भाभा, माधवन नायर और श्री कलाम ऐसे महान वैज्ञानिकों को नौकरशाहों के आधीन काम करना पड़ा। यहाँ से बाहर गए भारतीय पूरे विश्व मे प्रसिद्ध वैज्ञानिक और व्यवसायी के रूप में प्रतिष्ठित हैं और उन देशों की economy और G.D.P. में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

■■■

सृजन

पर, रम्भे ! क्या कभी बात यह मन में आती है,
माँ बनते ही त्रिया कहाँ –से–कहाँ पहुँच जाती है?
गलती है हिमशिला, सत्य है, गठन देह की खोकर,
पर, हो जाती वह असीम कितनी पयस्विनी होकर?
युवा जननि को देख शांति कैसी मन में जगती है!
रूपमती भी सखी! मुझे तो वही त्रिया लगती है,
जो गोदी में लिये क्षीरमुख शिशु को सुला रही हो
अथवा खड़ी प्रसन्न पुत्र का पलना झुला रही हो

('दिनकर')

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष

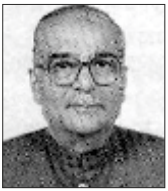

न्यायमूर्ति डी0के0 त्रिवेदी

महासचिव

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए0 के0 त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

जे0 के0 त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष

पी0 एन0 मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा0 आर0 के मिश्रा
आर्थो सर्जन

उप मंत्री

के0 एस0 दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी0 एस0 मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

डा0 डी0 एस0 शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह–सम्पादक

एस0 एन0 दीक्षित
इंजी0 लेसा

सह–सम्पादक

डा0 अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

वर्ष 2016–2017 मंच पर वितरित पारितोषिक

1. स्व. पं. आर.के. मिश्र 'मान भाई' पारितोषिक प्रदत्त ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र (अ.प्रा.), कु. रोली शुक्ला पुत्री श्री रविशंकर शुक्ल, बी.ए.प्रथम वर्ष, कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कालेज, आलमबाग। रु. 3100/–

2. स्व. कु. सोनल मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थो सर्जन आर. के. मिश्र, कु0 श्वेता मिश्रा पुत्री श्री दीपक कु0 मिश्र कक्षा XI, स्व. लाला जी.पी. वर्मा बा.इं. कॉलेज, गोसाई गंज–लखनऊ रु. 3000/–

3. ब्रिगेडियर छंगा लाल पाण्डे (अ.प्रा.) पारितोषिक, कु. आकांक्षा तिवारी पुत्री श्री पुनीत तिवारी, कक्षा–11 कस्तूरबा बा.वि. कालेज, शिवाजी मार्ग। रु. 2100/–

4. स्व. डा. विष्णु कुमार मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थोसर्जन आर.के. मिश्र, कु. प्रगति त्रिपाठी द्वारा श्री गोविन्द प्रसाद मिश्र, कक्षा–5, ग्रीन फील्ड स्कूल, निराला नगर। रु. 2000/–

5. स्व. श्रीमती आशा द्विवेदी पारितोषिक II प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. साक्षी मिश्रा पुत्री श्री हरीश मिश्र, कक्षा–6, विष्णु नगर शिक्षा निकेतन कं.इं. कालेज, खुर्शेदबाग। रु. 1100/–

6. स्व. रायबहादुर उदित नारायण पाठक आफ सिसेन्डी पा. प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. निहारिका मिश्रा पुत्री श्री वेदरत्न मिश्र, कक्षा–11, पं. रामसेवक त्रिवेदी बा.इं. कालेज, इटौंजा। रु. 1100/–

7. स्व. श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद शुक्ल आफ सरकुटिया स्टेट पा. प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. सृष्टि झा पुत्री श्री ध्रुव कुमार झा, कक्षा–9, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इं. कालेज, चारबाग लखनऊ। रु. 1100/–

8. स्व. श्री उमाशंकर बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री आशुतोष बाजपेई, कु. अंजली द्विवेदी पुत्री श्री मुकेश द्विवेदी, कक्षा–11 बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इं.कालेज, चारबाग, लखनऊ। रु. 1100/–

9. स्व. श्रीमती विनोदिनी बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री आशुतोष बाजपेई, कु. जया मिश्रा पुत्री श्री श्याम बिहारी मिश्र, कक्षा–8, बाल विद्या मंदिर सी.से. स्कूल, चारबाग, लखनऊ। रु. 1100/–

10. स्व. श्रीमती शैल शुक्ला पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई, कु. शाम्भवी मिश्रा, पुत्री श्री रामकुमार मिश्र, कक्षा–11, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन क.इं.का., खुर्शेद बाग, लखनऊ। रु. 1100/–

11. स्व. श्रीमती रामा देवी मिश्रा पारितोषिक प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र, कु. शुभी मिश्रा, पुत्री श्री प्रमोदशंकर मिश्र, कक्षा–6, काशीश्वर इन्टर कालेज, मोहनलाल गंज, लखनऊ। रु. 1100/–

12. स्व. श्रीमती विद्देश्वरी देवी पारितोषिक प्रदत्त डा. सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी, अथर्व मिश्र पुत्र श्री मनोज मिश्र, कक्षा–6, बी. एस.एन.वी. जूनियर हाई स्कूल, चारबाग, लखनऊ। रु. 1000/–

13. स्व. श्रीमती संध्या तिवारी (पुत्रवधू) पारितोषिक प्रदत्त श्री बी.एन. तिवारी, कु. अनामिका शुक्ला पुत्री श्री राजेश शुक्ल, कक्षा–8, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन क.इं.का., खुर्शेदबाग लखनऊ। रु. 1000/–

14. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक I प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, कु. आकांक्षा त्रिपाठी पुत्री श्री नरेन्द्र त्रिपाठी, कक्षा–8, कस्तूरबा बा.वि. इं. कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ। रु. 1000/–

15. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक II प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, कु. साक्षी मिश्रा पुत्री श्री अशोक मिश्र, कक्षा–10, कस्तूरबा बा.वि. इं. कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ। रु. 1000/–

16. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक III प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, कु. प्रतिभा बाजपेई पुत्री श्री अनिरुद्ध बाजपेई, कक्षा–8, कस्तूरबा बा.वि. इं. कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ। रु. 1000/–

17. स्व. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक प्रथम प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. साक्षी मिश्र पुत्र श्री संतोष कुमार मिश्र, कक्षा–6, आँचल पब्लिक स्कूल भीखमपुर, इटौंजा। रु. 1000/–

18. स्व. श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. दीक्षा मिश्रा पुत्री श्री अनिल कुमार मिश्र, कक्षा–9, बाल विद्यामंदिर सी.से. स्कूल, चारबाग, लखनऊ। रु. 1000/–

19. स्व. श्री जयशंकर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त, कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, एडवोकेट हाईकोर्ट, कु. आयुषी तिवारी पुत्री श्री प्रेमशंकर तिवारी, कक्षा–8, यशोदा देवी बाल शिक्षा निकेतन, लखनऊ। रु. 600/–

20. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक I प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. नेहा अवस्थी पुत्री श्री विनोद कु. अवस्थी, कक्षा–11 कस्तूरबा बा.वि.इं. कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ। रु. 1000/–

21. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक II प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई, कु. साक्षी तिवारी पुत्री श्री पुनीत तिवारी, कक्षा–12 कस्तूरबा बा.वि.इं. कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ। रु. 750/–

साइकिल, स्कूल–ड्रेस व नगद पुरस्कार पाने वाले छात्रायें एवं छात्र

1. शांति मिश्रा, हटौरा, खैराबाद, सीतापुर — साइकिल
2. राखी मिश्रा बिसवाँ सीतापुर — साइकिल
3. खुशी द्विवेदी पुत्री अजय द्विवेदी, सिटी कन्वेंट स्कूल — साइकिल
4. नीहारिका बाजपेयी, B.A.-I, अर्जुनगंज विद्यामन्दिर, लखनऊ — साइकिल
5. खुशी शर्मा, दयानन्द कालेज, लखनऊ — साइकिल
6. स्वर्णिमा तिवारी बी.काम. 1 लालबहादुर शास्त्री कालेज — साइकिल
7. श्रेया दीक्षित खैराबाद, सीतापुर — साइकिल एवं कालेज ड्रेस
8. लक्ष्मी शुक्ल कक्षा–9 डी.ए.वी. कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ — स्कूल–ड्रेस
9. शालिनी उपाध्याय, कक्षा–8, डी.ए.वी. कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ — स्कूल–ड्रेस
10. अनुपमा मिश्रा, कक्षा–11, डी.ए.वी. कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ — स्कूल–ड्रेस

नगद पुरस्कार

1. रिया कौशिक राजकीय पालिटेक्निक, मेरठ — रु. 8000.00
2. ईशान, प्रदत्त द्वारा श्री गंगा नारायण तिवारी, अपने माता–पिता की स्मृति में — रु. 5000.00
3. अभिलाषा शुक्ला, नेशनल लेवेल एथलीट प्रदत्त

सहयोग के लिए जिनके हम आभारी हैं

1.	श्री राजीव शर्मा, कान्यकुब्ज सभा एवं कान्यकुब्ज वाणी हेतु	₹. 50,000.00
2.	श्री गंगा नारायण तिवारी	₹. 6,000.00
3.	श्रीमती मीनू द्विवेदी	₹. 5,000.00
4.	श्री राजेश मिश्रा	₹. 5,000.00
5.	इं. अनिल कुमार मिश्रा	₹. 5,000.00
6.	श्री रामजी मिश्रा	₹. 5,000.00
7.	श्री नीरज द्विवेदी, हरिद्वार, उत्तराखंड	₹. 3,000.00
8.	इं. देवेश शुक्ल	₹. 3,000.00
9.	डा. परेश शुक्ला	₹. 2,000.00
10.	डा. डी.एस. शुक्ल अपनी मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा की स्मृति में	₹. 2,000.00
11.	श्री अखिलेश पाठक, मलीहाबाद, लखनऊ	₹. 2,000.00
12.	श्री तिलक मिश्रा	₹. 2,000.00
13.	श्रीमती अर्चना तिवारी	₹. 2,000.00
14.	आर्क्. आर.एन. मिश्रा	₹. 1,000.00
15.	डा. एस.के. त्रिपाठी	₹. 1,000.00
16.	श्रीमती अलका भट्टाचार्य, श्रद्धांजलि डॉ. स्व. विमल भट्टाचार्य (पति)	₹. 2,000.00
17.	ई. पीयूष दीक्षित, नोएडा– श्रद्धांजलि स्व. राम कृष्ण दीक्षित (पिता)	₹. 2,000.00
18.	श्री मधुसूदन दीक्षित–श्रद्धांजलि स्व. गेंदालाल दीक्षित (प्रपितामह)	₹. 2,000.00
19.	श्रीमती शैल मिश्रा, स्मृति पति स्व. जी.पी. मिश्रा	₹. 3,000.00

कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

संरक्षक **अनुदान–रु0 10000.00 मात्र**

1. न्यायमूर्ति श्री डी0के0 त्रिवेदी (अव.प्रा.) लखनऊ। 9415152086
2. श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस. 9810722663
3. डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस.

वाणी पुत्र **अनुदान रु0 5000.00**

1. डॉ0 यू0डी0 शुक्ल (स्व0), लखनऊ
2. डॉ0 वी0के0 मिश्र, लखनऊ। 9415020426
3. इं0 एम0एन0 मिश्रा, लखनऊ। 9453945400
4. ललित कुमार बाजपेयी, रायबरेली। 9415034368
5. उदयन शर्मा

अति विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 3000.00**

1. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली। 9450558657
2. श्रीमती रोली तिवारी। 9839882742
3. श्री रामजी मिश्र, सीतापुर। 9450379054
4. इं0 देवेश शुक्ल, लखनऊ। 9450591538

विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 2000.00**

5.श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी। 9335159363
6. श्री उपेंद्र मिश्र, लखनऊ। 9415788855
7. डा0 आर0एस0 बाजपेयी
8. डा0 आर0के0 मिश्र। 9415012333
9 पं0 विनोद बिहारी दीक्षित (स्व0)
10. पं0 विजय शंकर शुक्ल (स्व0) लखनऊ
11. डी0के0 बाजपेयी, लखनऊ। 9621479044
12. प्रो0 पी0पी0 त्रिपाठी, बलरामपुर। 9450551394

13. डा0 प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर। 9919879799
14. डा0 निधि त्रिपाठी, बलरामपुर
15. डा0 बी0एन0 तिवारी, आई0ए0एस0, लखनऊ
16. श्रीमती सुमन शुक्ला, लखनऊ

आजीवन सदस्य **अनुदान रु0 1000.00**

1. श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी,लखनऊ। 9307222027
2. पं0 भारतेन्दु त्रिवेदी,सीतापुर। 9451194337
3. श्री राधा रमण त्रिवेदी, सीतापुर
4. श्री के0के0 त्रिवेदी, लखनऊ। 9415020510
5. श्री आर0सी0 त्रिपाठी,लखनऊ। 9415012040
6. श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ। 950666731
7. श्रीमती मीनू द्विवेदी,कानपुर। 9336166380
8. इं0 बसंत राम दीक्षित, लखनऊ। 9335075482
9. श्री सुधीर कुमार पांडे, लखनऊ। 9415521031
10. श्रीमती अर्चना तिवारी, लखनऊ।
11. एडवो0 कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, लखनऊ। 9415026087
12. श्री अनिल कुमार त्रिपाठी,सीतापुर। 9415524848
13. ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, लखनऊ। 9454592411
14. श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ। 9455713711
15. डा0 अनुराग तिवारी, कानपुर। 9415735630
16. श्री आर0के0 शुक्ल, लखनऊ। 9919623121
17. डा0 आर0सी0 मिश्र, लखनऊ। 0522 6521353
18. श्री विनोद कुमार मिश्र, उन्नाव। 9919740633
19. श्री राजकिशोर अवस्थी, लखनऊ। 9956084970
20. डा0 पी0एन0 अवस्थी, लखनऊ। 9415308555
21. श्री कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ। 9335968454
22. श्री विनय कुमार शुक्ल,रमा बाई नगर। 9450350878

23. श्री मनी कान्त अवस्थी, लखनऊ । 7607479838
24. श्रीमती अनुराधा शुक्ला, रायबरेली
25. इं. के0बी0 शुक्ल, लखनऊ। 9415004466
26. श्रीमती हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ। 9721975102
27. श्री ब्रह्म शंकर दीक्षित, लखनऊ। 9415049660
29. श्री शंभु प्रसाद पांडे, लखनऊ। 9450717711
30. ई0 एस0एस0 शुक्ल, लखनऊ। 9450761403
31. श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी
32. श्री ज्ञान सिंधु पांडे, लखनऊ। 8765531281
33. श्री डी0एन0 दुबे, आई0ए0एस0, लखनऊ। 9415408018
34. श्री श्रीकांत दीक्षित, लखनऊ। 9415766901
35. उमेश चंद्र मिश्र, लखनऊ। 9305245599
36. डा0 ओंकार नाथ मिश्रा, लखनऊ। 9415022957
37. श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर
38. श्री राघवेंद्र मिश्र, लखनऊ । 9918001628
39. प्रफुल्ल कुमार पाठक, रायबरेली । 7388192190
40. मीरा शिवेन्दु शुक्ल, कानपुर । 9721756269
41. श्री आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ । 9415018200
42. श्री समीर बाजपेयी, इलाहाबाद । 9415306363
43. श्री राकेश कुमार मिश्र, लखनऊ। 9335209896
44. डा0 एस0के0 त्रिपाठी, लखनऊ। 9335917261
45. श्री राजेश नाथ मिश्र, लखनऊ। 9454292354
46. मालती विजय शंकर मिश्रा, लखनऊ। 9336704017
47. राम कृपाल त्रिपाठी, लखनऊ
48. सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी, लखनऊ। 9335230767
49. राकेश कुमार शुक्ल, लखनऊ। 9005409001
50. विमल कुमार जेटली, लखनऊ– 9451246381
51. अनामिका शर्मा, नई दिल्ली । 09990455986

52. श्री एस.के. मिश्रा लखनऊ

बाहरी प्रांतों के सदस्य

1. डा0 आर0के0 त्रिपाठी, देहरादून, उत्तराखण्ड। 09935478815
2. यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली। 9818434337
3. राम अवस्थी, ट्रांबे, मुंबई। 09820026914
4. नीरज त्रिपाठी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड 09837077546
5. अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर म0प्र0 09300104481
6. अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद। 09407290639
7. वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली
8. श्रीमती सविता दुबे, धारवाड, कर्नाटक
9. देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर, राजस्थान। 09414075174
10. पं0 शिव शंकर तिवारी, सिकंदराबाद, आंध्र प्रदेश
11. शिशिर कुमार बाजपेई फरीदाबाद हरियाणा 09899041178
12. प्रदीप चंद्र तिवारी, जयपुर। 09414097679

दूरस्थ देश के सदस्य

1. विजय शुक्ला द्वारा गिरीश चन्द्र शुक्ला, सिडनी

■■■

RATE LIST OF ADVERTISEMENT IN MAGAZINE

KANYA- KUBJ VAANI

Full page Colored	**Rs. 5000/-**
Half page Colored	**Rs. 3000/-**
Full Page Black & white	**Rs. 3000/-**
Half page Black & white	**Rs. 1500/-**

Cheque should be in name of 'Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja' Pratinidhi Sabha Lucknow.

(A/c. No.710601010023908, IFSC Code- VJB0007106, Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow).

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए. उल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522–2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

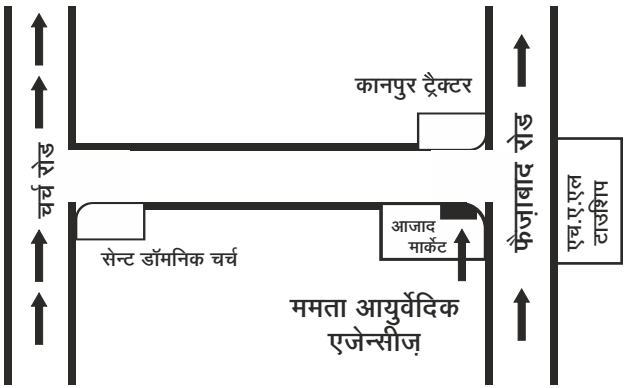

DN DUBE उवाच...

कुछ दिनों पूर्व एक सम्मेलन के दौरान मा० मुख्य न्यायाधीश, भारत ने न्यायालयों में बड़ी संख्या में लम्बित वादों के कारण पर अपने विचार व्यक्त किये जिनकी व्यापक चर्चा हुई –होनी भी चाहिए थी। पर उसी सम्मेलन की एक और खबर आई ,जिस पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। खबर यह थी सम्मलेन में मा० मुख्य मन्त्री, उ० प्र०, की ओर से जो विचार पढ़े गए उसमें यह भी था कि अफसरों को अदालत में खड़े रहने से फुरसत मिले तब तो वह काम कर पाएं। मेरे विचार से अदालतों में लम्बित वादों का एक बड़ा कारण वास्तव में इस वाक्य में छुपा हुआ है। उस कारण पर विचार करें उसके पहले यह तो स्मरण रखना ही होगा ,जैसा कि महामहिम श्री राष्ट्रपति और महामहिम श्री उपराष्ट्रपति ने इंगित किया था, कि PIL और न्यायिक सक्रियता के प्रति न्यायपालिका के बढ़ते रुझान के कारण अदालतों को अपना मूल कार्य करने के लिए कम समय मिल पा रहा है। पर PIL और न्यायिक सक्रियता का मूल क्या है और क्योंकर यह अमर बेल की तरह फैली?

इस प्रश्न का उत्तर मु० मन्त्री, उ०प्र० के उपरोक्त वाक्य में छुपा हुआ है। वस्तुतः यह मूल्यांकन सही नहीं है। स्थिति यह है कि यदि अधिकारी अपना काम करें और सही तरीके से करें तो वह तो अदालतों में खड़े होने से बच ही जाएंगे बल्कि अदालतों की वर्तमान संख्या ही कमो–बेश फिलहाल काम चला सकती है जब तक कार्य–पालिका बनाम न्याय–पालिका की समस्या का समाधान न आ जाये। वस्तुतः यह भाषण किसी अधिकारी ने ही तैयार किया होगा लेकिन मेरा मा० मु० मन्त्री जी से अनुरोध है कि वह कोई भी 10 ऐसे मामले निकलवा लें, जिसमें किसी प्रमुख सचिव की व्यक्तिगत उपस्थिति अदालत ने आदेशित की हो ,और उनका विश्लेषण किसी निष्ठावान अधिकारी (जिसकी निष्ठा संविधान के प्रति हो, न कि सत्तारूढ़ दल के प्रति) करे तो वह पाएंगे कि 9 मामलों में सरकारी अधिकारी की अकर्मण्यता, किसी उद्देश्य विशेष के प्रति उसका मोह, न्याय के प्रति उसका अवज्ञा–भाव इनमें से एक अथवा सब मिला कर ––उसका कारण होंगे और 1 मामले में अदालत की हठ–धर्मिता या अन्य कोई समुचित कारण। क्योंकि 70 प्रतिशत वादों में सरकार ही एक पक्ष होती है। अतः यदि अधिकारी अपना प्रत्येक निर्णय स्व–विवेक से बगैर भेद भाव के, राज्य के हित (किसी राजनैतिक दल या

व्यक्ति के हित में नहीं) में, अर्ध–न्यायिक रूप से लें, तो अदालतें तो मुकदमे के लिए लगभग तरस जाएँगी। क्योंकि कार्य–पालिका अपने कर्तव्यों के प्रति संजीदा नहीं है, वह जो भी निर्णय लेती है उसमें मात्र, और मात्र, अपना राजनीतिक लाभ–हानि ही देख रही है इसलिए एक प्रशासनिक खालीपन पैदा हुआ है और खाली स्थान कोई तो भरेगा अतः PIL और जुडिसियल एक्टिविज्म उस अवकाश को भर रहे है।

This reminds me of a book, written by an English ICS,which I read before I joined the services. Unfortunately, I can't remember the name of the book .There is an incident quoted in the book and at that time an ICS had an option either to go to judiciary or to administration. An young ICS probationer, while undergoing training with his Collector said, "Sir, I feel that I should had opted for the judicial side."

"Why young man? "asked the Collector.

"Because there I would have been in a better position to give justice -", said the probationer.

"well, young man your feelings are misplaced because sitting as a judge you would have been dispensing LAW while in administration that you would be providing justice-"

And this has been my guiding principle throughout my own service.

और पूरी नम्रता के साथ मैं यह कह सकता हूँ कि ऊपर जो भी लिखा है वह अनुभव –जन्य है।

■■■

उत्तप्त प्रणय

जहाँ प्रेम राक्षसी भूख से क्षण–क्षण अकुलाता है,
प्रथम ग्रास में ही यौवन की ज्योति निगल जाता है।
धर देता है भून रूप को दाहक आलिंगन से,
छवि को प्रभाहीन कर देता ताप–तप्त चुम्बन से,
पतझर का उपमान बना देता वाटिका हरी को,
और चूमता रहता फिर सुन्दरता की गठरी को.
इसी देव की बाहों में झुलसेंगी अब परियाँ भी।

('दिनकर')

अखिल भारतीय

कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

और

कान्यकुब्ज वाणी

को

होली एवं नवसंवत्सर

की

हार्दिक शुभकामनाएं

भावना इन्टरप्राइजेज

प्रो0 बालकृष्ण द्विवेदी

मो.9415365814

प्राकृतिक संवेग और स्वच्छता अभियान

डा. डी एस शुक्ला

•

नरेंद्र मोदी में जनमानस तक सीधे संवाद स्थापित करने की क्षमता अद्‌भुत है। उनके स्वच्छता अभियान के आह्‌वान का मुझ 70 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक पर भी सीधा असर पड़ा। मैं भी इस अभियान में सक्रिय हो उठा। मेरी स्वयं की स्टडी–टेबल चाहे कितनी ही अस्त–व्यस्त क्यों न हो, पत्नी द्वारा भूल से भी छोड़ा गया सब्जी का छिलका उसी को दिखाते हुए उठा कर कूड़ेदान में डालने का नियम बना लिया। राह चलते भी किसी को गंदगी करते देखता तो रुक कर टोकने का नागरिक दायित्व समझाने को अपना कर्तव्य बना लिया था। नाली या सुंदर मकान की बाउंड्रीवाल पर जलत्याग करते हुए महानुभावों को क्रिया मध्य ही टोकने का पुनीत नागरिक कर्तव्य निर्वहन करता था। हाँ, एक आध बार ऐसा भी हुआ कि किसी पहलवान छाप के घूरने पर कई बार क्षमा याचना द्वारा आत्मरक्षा कर सका।

एक शाम घर से काफी पी कर एक जिगरी दोस्त के यहाँ गपशप करने पहुँचा। मित्र अकेला था फिर भी चाय–पानी से स्वागत हुआ। कुछ देर बाद तय हुआ कि हजरतगंज के सुंदरीकरण का जायजा भी ले लिया जाय। मित्र ने याद दिलाया कि जीवन की तरुणाई में हम लोग 'सुंदरी–दर्शन' के लिए जाया करते थे। तय हुआ कि केवल उम्र के साथ नामावली में परिवर्तन हुआ है, मंतव्य तो आज भी वही है।

गाड़ी मल्टीलेवेल पार्किंग में पार्क कर हम लोग 'गंजिंग' हेतु निकल पड़े। नये रंगोरोगन से हजरतगंज सुंदर लग रहा था। लव–लेन के नयनाभिराम दृश्यों ने याद दिलाया कि आज सैटरडे ईवनिंग है। कालेज के दिन याद आ गये। शनिवार की शाम मेस बंद रहती थी, सो बाहर खाना मजबूरी थी। कैसे हम घंटों हजरतगंज टहलते, मद्रास कैफे में चार आने में दोसा खाते। पूरी शाम 'गंजिंग' करते, परन्तु खाना किसी ढाबे में ही खाते (हजरतगंज में खाना जेब पर भारी था)। रौनक देख कर फ्रूट–जूस पिया फिर कोल्डकाफी विद आइसक्रीम भी केवल यह सोच कर ली गई कि अब हम एफोर्ड कर सकते हैं।

मैं काफी प्रसन्न था। बहुत दिनों के बाद शाम इतनी खुशगवार गुजर

रही थी। एकाएक कुछ रंग में भंग होने का आभास होने लगा। पेट के निचले हिस्से में कुछ असुविधा सी होने लगी। समझ में आया कि चाय,काफी, फ्रूट जूस आदि आत्मसात करने के बाद गुर्दे अपनी जिम्मेदारी पूरी तौर से निबाह रहे थे। 'लघु–शंका' प्रारम्भ में ही लघु रहती है; फिर धीरे–धीरे उसका संवेग लघु से दीर्घ होने लगता है। मैं बेचैन होने लगा। एक दुकानदार से पूछा "भाई, यहाँ वाशरूम कहाँ है?"

वह मुझे कुछ देर तक घूरने के बाद बोला, "यहाँ की जमीन का रेट जानते हो?"

मैंने नकारात्मक भाव में सिर हिलाया।

"50000 रु प्रति स्क्वायर फिट", उसने अपने आप ही बताया।

मेरी समझ नहीं आ रहा था कि वाशरूम के बारे में मेरी जिज्ञासा का जमीन के रेट से क्या संबंध।

दुकानदार ने मुझे नासमझ मान कर समझाया, "बाबू जी, वाशरूम बनाने के लिये कम से कम 100 स्क्वायर फिट जमीन कि आवश्यकता तो पड़ेगी ही। सिर्फ आपके मू...ने, मेरा मतलब है एक वाशरूम के लिये कोई 50 लाख की जमीन क्यों बरबाद करेगा? आप खुद ही सोचिए।"

काश उसे पता होता कि मैं सोचने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं बड़ी बेचैनी से दुकान के बाहर निकल आया। मेरा मित्र जो कि स्वस्थचित्त था और सोच सकने की स्थिति में था उसने दुकानदार से पूछा, "श्रीमान जी, जब आपको लगती है तो 50 लाख की बात सोच कर रुक जाती है क्या? आप भी तो कहीं न कहीं जाते ही होगे?"

अबकी नान्प्लस (निरुत्तर) होने की बारी दुकानदार की थी। वह तोते की तरह गर्दन टेढ़ी कर, चश्मे के ऊपर से देखता हुआ बोला, ''वाशरूम मल्टीलेवेल पार्किंग में बने हैं।'' मित्र दौड़ कर मेरे पास आया और महत्वपूर्ण सूचना मुझे दी। हम दोनों लगभग भागते हुए पार्किंग पहुंचे.....वाशरूम बंद था। निराश होने के पहले ही याद आया कि पार्किंग तो मल्टीलेवेल है। हम पहली मंजिल के लिए भागे। लिफ्ट का इंतजार करना व्यर्थ मान जीने से ही ऊपर गए.... वहाँ भी आला समाशोधन सुविधाओं पर ताला लगा था। दो और मंजिलों का साहसिक आरोहण किया गया। नतीजा वही। जिस्म थक गया, साँस फूल रही थी। थकने से आवेग रोकने की क्षमता जवाब देती महसूस हो रही थी। क्या करूँ? विकट प्रश्न।

मित्र फिर एक बार सहाय हुआ, बोला "बंधु, यहीं खड़े हो कर निवृत्त हो

लो। जब तक धार नीचे पहुँचेगी तुम्हारा समाधान हो चुकेगा। मैं दूसरे कोने से नीचे देख रहा हूँ।"

मैंने आश्वस्त हो कर अभी प्रारम्भ ही किया कि नीचे से गरजती आवाज आई, "कौन है बे?कोई ऊपर से मू.. रहा है क्या?"

तभी मित्र ने दौड़ कर मुझे बाउंड्री से पीछे खींच लिया। मेरी बदकिस्मती से नीचे पुलिस वैन खड़ी थी। पुलिस का एक सिपाही ऊपर की ओर भागा। हम दोनों एक फ्लोर तेजी से उतरे, मगर फिर आराम से कारों के बीच से निकलते हुए पार्किंग के बाहर आ गये। मुझसे ज्यादा मेरा मित्र डर गया था। मैं आश्वस्त था कि मेरा 'जो और जितना अंग' पुलिस ने देखा था उतने से वह मुझे पहचान नहीं सकते।

हम लोग सड़क पर आ कर सिविल अस्पताल की ओर चल पड़े। चौराहा पार करने में थोड़ी देर लगी। उतनी देर में मेरी बेचैनी और बढ़ गई। जिस प्रकार बाढ़ को एक बार रास्ता मिल जाने से बहाव का दबाव और तीव्र हो जाता है, वही हाल मेरा था। थोड़ा रिलीफ मिलने की जगह बेहाली और बढ़ गई थी। एक हाथ जेब में डालकर अपने को कंट्रोल करते हुए हम किसी तरह ट्रेफिक बूथ तक पहुँचे। ट्रैफिक बूथ के पीछे तीन चार फिट की खाली जगह देख कर मुझसे रुका नहीं गया। 'जो होगा देखा जायेगा' के आत्मघाती मूड में मैं वहीं शुरू हो हो गया। मेरा मित्र मुझे आड़ दे रहा था। तभी चौराहे की तरफ से एक पुलिस वाले ने ललकारा "हे..., क्या कर रहा है, जेल जाना है क्या?"

न चाहते हुए भी मैं रुक गया और बाहर आ गया। सिपाही भी आश्वस्त हो कर अपनी ड्यूटी में लग गया।

मुझे रावण की वह कथा याद आई, जब वह भी अपने संवेग को रोक नहीं पाया और उसे भगवान शिव के विग्रह को रखना पड़ा।

मैं इन दो वाकयों से बालों–बाल बचने पर कुछ ज्यादा बोल्ड हो चुका था। सो वहीं पर एक बार फिर शुरू हो गया। कितना समय व्यतीत हुआ मुझे खुद मालूम नहीं। एक भारी हाथ मेरे कंधे पर पड़ा और मुझे जोरों से झझकोरा। मैंने मूड़ कर देखा वही सिपाही (जिसने मुझे टोका था) मुझे क्रोध से घूर रहा था। मेरे मित्र का कहीं अता–पता नहीं था। मैं समझ गया कि अब इज्जत खतरे में है।

संवेग से निवृत्त होने के बाद अब मैं आश्वस्त था और मस्तिष्क सुचारु रूप से चेतन हो चुका था।

मुझे किसी मोटे से रुआबदार अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। थोड़ी देर तक वह अधिकारी मुझे घूरता रहा। मैंने भी आँखें नीची नहीं की। वह बोला "सार्वजनिक स्थान पर आप पेशाब कर रहे थे?"

"जी हाँ, पर मजबूरी में" मैंने दृढ़ता से उत्तर दिया

संभवतः इस प्रश्न पर वह मिमियाती आवाज सुनने का आदी था। उसे गुस्सा तो आया पर उसे वह दबाते हुए बोला, "मालूम है, इसके लिए आपको जेल भी हो सकती थी?"

मैं "आप मुझे फाँसी दे दें, पर मेरे एक प्रश्न का उत्तर दे दें।"

अधिकारी मुझे घूर रहा था। मैंने पूछा, "यदि आप को अभी लघु–शंका लगे तो आप कहाँ जाएंगे?"

अधिकारी इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था। वह दाहिने–बाएँ देखने लगा। सिपाही भी आश्चर्य से मुझे देख रहा था।

मैंने साधिकार उसकी टेबल पर हाथ रख कर कहा, "श्रीमान जी, आप ही नहीं आपके सिपाही भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं जानते। आपके इस सिपाही को बूथ के पीछे निवृत्त होते देख कर मैं भी चालू हो गया। यह पहले निपट लिया और उन्हीं अशुद्ध हाथों से मुझे पकड़ कर आपके सामने पेश कर दिया। आप ही बताइये कि जब आपका सिपाही यह कर सकता है तो साधारण जनता को यदि लगी हो तो कोई कहाँ जाये?"

अधिकारी ने सिपाही को देख कर जोर से पूछा, "तो तुम भी..."

सिपाही कुछ प्रतिवाद करना चाहता था कि मैंने उसे चुप करा कर अधिकारी से कहा "सर, यह अपनी गलती कैसे मान सकता है? आप किसी को भेज कर दिखला लें वहाँ दो लोगों के मूत्र–विसर्जन के चिह्न होंगे।"

अफसर के कहने पर दूसरा सिपाही 'मौकाए मुआएना' पर गया और रिपोर्ट किया "श्रीमान जी, मौके पर दो जगह पर मूत्र–त्याग के चिह्न हैं।"

अफ्सर ने आग्नेय आँखों से सिपाही को देखा फिर अपने स्टेनो से बोला, "मेयर साहब को एक पत्र लिखो कि सार्वजनिक स्थानों पर वाशरूम आदि की सुविधाओं का बहुत अभाव है, कृपया उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें।" मुझसे कहा ठीक है आप जा सकते हैं।

जान बची लाखों पाये। राम राम करता मैं सबसे पहला आटो पकड़ कर घर आ गया।

■■■

बिटिया

• सचिन बाजपेयी
कैलिफोर्निया

तेरी मुस्कान मेरी सुबह
तेरी शरारत मेरे हँसने की वजह
तेरी जिद्द मेरी जिरह
तेरा चेहरा मेरा बचपन
तेरा प्रयास मेरा समर्थन
तेरा प्रश्न मेरा मंथन
तेरी इच्छा मेरा कर्तव्य
तेरी सफलता मेरा गंतव्य
तेरा व्यवहार मेरा व्यक्तव्य
तू मेरी पूजा तू मेरी लगन
तू मेरी धरती तू मेरा गगन
तू मेरी ईदी तू मेरा शगन

x x x

तेरी मासूमियत के नूर से रोशन चमन मेरा
नासमझ मैं समझता था खुदा बसता है बादलों में कहीं,
मेरे आशियाँ में तेरे वजूद ने तोड़ा वो भरम मेरा!
खुश था जिंदगी से मैं तेरे आने के पहले भी
पर रोज माँगता था खुदा से कुछ न कुछ
पाया जब तुझे अपनी अपनी दुआओं के सबब में
बाकी कुछ न रहा मांगना मेरा !!!

सचिन बाजपेई ने अपनी बेटी के जन्म के एक माह बाद ये कविता लिखी। उनका तीन वर्ष का बेटा भी हैं परन्तु अपनी बेटी के साथ वे स्वर्गीय आनन्द अनुभव करते हैं।

■■■

नर्सरी से इण्टर तक पंजीकरण/प्रवेश सभी कक्षाओं हेतु प्रारम्भ

सा विद्या या विमुक्तये
माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त

गौरवशाली तीस वर्ष

दयानन्द इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

विद्यालय वैशिष्ट्य

- नर्सरी से इण्टरमीडिएट तक मानविकी, वैज्ञानिक, वाणिज्य वर्गों में सह–शिक्षण की उत्तम व्यवस्था
- शत प्रतिशत परीक्षा– फल, अनुशासन एवं भारतीय संस्कारों का अभिनव केन्द्र।
- ज्ञानार्जन हेतु समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था।
- गृह विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर की सुसज्जित स्तरीय प्रयोगशालाएँ।
- खेल–कूद, रेडक्रास, स्काउट–गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से बालक–बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की पूरी व्यवस्था।
- नैतिक मूल्यों के संवर्धन की पूर्ण व्यवस्था के साथ Spoken English के अभ्यास की पूर्ण व्यवस्था।
- स्वास्थ्य, आवागमन/ यातायात की समुचित व्यवस्था।
- योग्य, अनुभवी, कर्मठ शिक्षक/ शिक्षिकाओं द्वारा ही सभी कार्य सम्पन्न किये जाते है।

रामउजागिर शुक्ल
प्रधानाचार्य

अन्य संस्थाएँ

1– श्रीमती उमा शुक्ला कन्या विद्यालय, जियामऊ, लखनऊ।
2– जगपती शीतला प्रसाद ट्रेनिग कालेज, (बी.टी.सी.) सुल्तानपुर।
3– रामखेलावन मेमोरियल, डिग्री कालेज, सुल्तानपुर।
4– रामखेलावल मेमोरियल पब्लिक स्कूल, सुल्तानपुर।

सुभाष श्रीवास्तव
अध्यक्ष

प्रवेश फार्म उपलब्ध यथा शीघ्र सम्पर्क करें

मोतियाबिन्दु तथा उपचार

• डॉ0 वी0के0 मिश्र

दृष्टिहीनता का प्रमुख कारण मोतियाबिन्द पाया जाता है। भारतवर्ष में लगभग 60 प्रतिशत से अधिक दृष्टिहीनता मोतियाबिन्द के कारण है। यह सामान्यतः 50 वर्ष की आयु के बाद होता है। अशिक्षित, निर्धन महिलाओं, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अज्ञानता तथा सेवाओं के अभाव के कारण व्यापकता अधिक होती है।

मोतियाबिन्द किसी भी आयु एवं लिंग के बच्चों अथवा वयस्कों को हो सकता है। जन्म के समय भी बच्चे मोतियाबिन्द से ग्रसित हो सकते हैं।

मोतियाबिन्द के मुख्य लक्षण धीरे–धीरे दृष्टि कम होना, दूर और नजदीक से धुँधला नजर आना, आँख में कोई दर्द अथवा लाली आना इसका लक्षण नहीं है। पुतली पर प्रायः भूरा अथवा सफेद रंग दिखाई दे सकता है।

जन्मजात मोतिया लेन्स में रक्त–संचार की कमी अथवा डिजनरेशन प्रक्रिया के कारण लेन्स के रेशों की पारदर्शिता कम होते–होते समाप्त हो जाती है, जिससे लेन्स से धुँधला अथवा बिल्कुल दिखाई देना बन्द हो जाता है, इस रोग को मोतियाबिन्द कहा जाता है। मोतियाबिन्द कोई संक्रामक बीमारी नहीं है।

मोतियाबिन्द जन्म से अथवा जन्म के बाद विकास के साथ–साथ बचपन में भी हो सकता है, जिसके मुख्य कारण प्रसव काल में माँ का कुपोषण, वायरल, संक्रामक रोग जैसे–मिजिल्स, रोबेला तथा अन्य संक्रामक रोगों से ग्रसित होना। इस प्रकार का मोतिया एक अथवा दोनों आँखों में हो सकता है। इस प्रकार के बच्चे वस्तुओं पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते तथा कभी–कभी आँखों में स्थिरता भी नहीं रहती है। बच्चों के अभिभावकों को तत्काल नेत्र चिकित्सक से चिकित्सा हेतु सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार के मोतियाबिन्द यदि दृष्टि को बाधित करते प्रतीत होते हैं तो जल्द से जल्द आपरेशन करा देना चाहिए। देर करने पर पूरी दृष्टि वापस आने की संभावना नहीं रहती।

वयस्क एवं वृद्धों में मोतियाबिन्द धीरे–धीरे बढ़ता रहता है, जिससे दृष्टि धीरे–धीरे कम होने लगती है। कभी–कभी एक वस्तुओं की कई वस्तुएं नजर आती हैं। लगता है कि एक चाँद के कई चाँद दिखाई दे रहे हैं। रोशनी के

चारों ओर इन्द्रधनुषीय गोले दिखाई दे सकते हैं। चश्मे का नम्बर बार–बार बदलने लगता है। दूर की नजर कमजोर होने लगती है तथा नजदीक का साफ दिखता रहता है, जो अंत में समाप्त हो जाता है।

स्लिट लैम्प परीक्षण, आप्थल्मोस्कोप आदि से मोतियाबिन्द की बीमारी की पुष्टि की जा सकती है। मधुमेह की बीमारी में प्रायः मोतियाबिन्द कम आयु पर भी हो सकता है।

मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में चश्मे बदलने से काम चल जाता है, परन्तु ऐसा न होने पर शल्यक्रिया आवश्यक हो जाती है। छोटे बच्चों से लेकर किसी भी आयु के रोगियों का आपरेशन किया जा सकता है। आपरेशन के बाद रोगी प्रायः सामान्य व्यक्तियों की तरह कार्य करने में सक्षम होते हैं।

पूर्व में बिना लेंस के आपरेशन किये जाते थे, जिसके बाद मोटा चश्मा लगाना पड़ता था तथा सामान्य कार्य करने में असुविधा होती थी। वर्तमान में आपरेशन के समय ही लेन्स प्रत्यारोपित कर दिया जाता है, जिसकी नाप पहले से ले ली जाती है। इस प्रक्रिया के बाद रोगी प्रायः सामान्य जैसा महसूस करते हैं। वर्तमान में प्रायः सभी आपरेशन बिना टाँके के तथा छोटे छिद्र द्वारा किये जाते हैं। फैको विधि एक सफल विधि है जो प्रयोग में लायी जा रही है। अब फैको आपरेशन के साथ लैजर का प्रयोग आपरेशन हेतु छेद बनाने के लिये भी किया जा रहा है। पी0एम0एम0ए0 लेन्स कठोर होते हैं, इनको लगाने हेतु 06 से 07 मिलीमीटर का छेद बनाने की आवश्यकता पड़ती है। फोर्डेबल लेन्सेस सिरिंज द्वारा डाले जाते हैं, जिसके लिये 02 से 03 मिलीमीटर छेद काफी होता है। मरीजों को आपरेशन के बाद प्रायः तुरन्त ही छोड़ा जा सकता है। अब मात्र दूर के लेन्स के साथ–साथ मल्टीफोकल लेन्स भी प्रयोग में प्रचलित हैं, जिनसे दूर एवं पास की दृष्टि भी ठीक की जा सकती है।

यदि मोतियाबिन्द से ग्रसित है ओर कार्य करने में असुविधा है तो ऐसी परिस्थितियों में डरने की आवश्यकता नहीं है। तत्काल नेत्र चिकित्सक से सम्पर्क कर आपरेशन करा लेना औचित्यपूर्ण होगा और दृष्टि सामान्य होने की सम्भावनाएं रहती हैं।

(डा0 वी0के0 मिश्र)

■■■

E-Transactions

❍ **Brigadier Shitanshu Mishra**

November the Eighth, 2016 has become a landmark date in the history of 21st century India. Shri Narendra Modi who came to power with a full majority in 2014 elections on the promise of eradicating corruption from the body politik of India, demonetized all currency notes in the denominations of Rs. 500 and 1000 from the mid night of taht day. This, he said was done in the manner of a surgical strike against hoarders of currency and anti national elements dealing with fake currency to destabilize the Indian economy. he sought cooperation from the people who would have to face practical difficulties and financial problems fro some time. To be precise, he said that within 50 days situation should normalize.

India ranked 85th among 175 countries in international corruption index in December 2014 as against 94th in 2013, as per the graft watchdog Transparency International India (TII). This by itself should have been no consolation. Corruption has become so entrenched into our system that not many seem to take it negatively. If you want to get a work done, it's better to pay (bribe) than keep running from pillar to post-that's waht general public believes. And those who have benefitted from it have little or no compunciton at all in flaunting their ill gotten money. But certainly in their hearts, Indian people were never happy with such a situation and sincerely watn riddance from this pathetic state because of the increasing disparity and resultant crime rate rise in the society.

As the demonetization process continued, Modi's rhetoric moved from fighting corruption to transititoning India to a cashless economy. Up until this campaign, India was an incredibly cash-centic economy. Cash accounted for upwards of 95% of all transactions, 90% of vendors didn't have card readers or the means of accepting electronic payments, 85% of workers were paid in cash, and almost half of the population didn't even have bank accounts. Even Uber in India accepted cash-the only country in the world where this option is available -and "Cash on Delivery" was the preferred choice of 70% of all online shoppers. This situation was easily exploited by the corrupt who ran a parallel economy which was almost as big as the national economy. Large sums of cash were stocked and used for buying gold and real estate besides splurging on luxurious goods. Big crime was mostly

funded in cash.

By temporarily turning off the engines which drove the cash economy, India hoped that more people could be brought into the fold by using track-able -and taxable-digital financing vehicles, like debit cards and e-wallets.

India is currently in the middle of an all out movement to modernize the way things are paid for. new bank accounts are being opened at a heightened rate, e-payment services are seeing rapid growth, cash-on-delivery in e-commerce has crashed, and digitally-focused sectors like the online grocery business have started booming.

Even the vegetable vendors on the streets have opened up Paytm accounts and they have a machine outside their shop where someone can scan the bar code and make the payment.

The lack of cash in the economy combined with the buzz around dlectronic payments systems has also sparked some very innovative solutions. The farmers' markers of Telangana began experimenting with their own electronic payment system where customers with AADHAR-linked bank accounts could buy veggetables using tokens which could be purchased via debit cards at specialized kioks.

Cryptocurrencies like Bitcoin and Asiadigicoin have also been the recipients of a positive upswing from Modi's currency purge-with Bitcoin in particular being driven up in value.

A cashless society derives the following inherent advantages:-

(a) Reduced risk and cost of carrying cash.

(b) Reduced tax avoidance.

(c) Record of transaction history.

(d) Improved credit access and financial inclusion.

But then why is there reluctance on part of Indians to go cashless?
The key barriers to digital payments are:-

(a) Habit and inertia to any change.

(b) Presumed complexities of non cash methods.

(c) Fraud likelihood and hidden charges.

(d) Reach of ordinary citizens.

(e) Last but not the least, lack of any compelling value proposition.

So what are our options for e-transactions in the current scenario?

(a) Interned Banking:-Bank customers with interned facility can and should use this facility for fund transfersand payment of bills.

(b) Credit/Debit Cards:-Credit cards offer the advantage of differed/partial payments as compared to the Debit (ATM) cards. However, in these the interest rate charged on payments beyound the credit limit is high and should be avoided. Payments can be effected through a POS (Point of Sale) machine at the vendor's premise. Mostly VISA, Master Cards, Citi Bank cards are being used and are more expensive as compared to Rupay service of NCPI (National Payment Corporation of India).

(c) Unified Pyament Interface (UPI):- Every bank has its own Mobile App which allows transactions using smart phones registered with the bank. The customer has to create his or her unique ID and UPI PIN for effecting a secure transaction.

(d) Unstructured Supplementary Service Data (USSD):-For this, one has to first link one's mobile number to his/her bank account and register for NUUP (National Unified NUUP Platform) service. NUUP is a USSD based mobkle banking service from NPCI that brings together all the Banks and Telecome Service Providers. In NUUP, a customer can access banking services by just pressing *99# from his/her mobile phones. This service works across all GSM mobile handsets. The Service over NUUP provides Bank's Mobile Banking Service over non java low cost mobile handsets also. This Service helps you to do following banking transactions :

* Balance Enquiry of account enabled for Mobile Banking Service.

* Mini statement (last five transactions) of the account enabled for Mobile Banking Service.

* Fund transfer to accounts (using Mobile Number and MMID)

* Fund transfer to account (using IFS Code and Account Number)

* MMID Retrieval

* Change MPIN

* Generate OTP for IMPS Merchant Payments

(e) E Wallets. Many e Wallets are available in the market such as SBI Buddy, HDFC PayZapp, ICICI Pockets, Paytm, Mobikwik, CitrusPay, Airtel Money, Joio Money etc. One has to download the app, link with his/her Credit/Debit card or internet banking account for effecting transfers/payments.

(f) Aadhaar Enabled Payment Service (AEPS). This service enables any individual with Aadhaar card to transfer funds, enquire account balance, transfer funds including cash deposit and with drawal at points where a Biometric scanner is installed and linked to AEPS. No internet or even mobile phone is required for this, neither a POS. Today many smartphones have biometric readers and hence the access and payment is very easy.

There are certain serious concerns too for the success of the efforts being made towards a cashless society. Firstly, only 27% of Indians have internet access as against a global average of 67%. Even urban India has just 58% people who access internet. However there are alternates being offered for cashless payments to overcome this difficulty. Secondly, for a majority of banking applications, a smartphone is a prerequisite. India is Asia-Pacific's fastest-growing smartphone market, but no more than 17 percent of Indian adults own a smartphone, according to a 2016 survey by Pew Research. Only 7 percent of adults in low-income families own a smartphone; the figure for wealthier families is 22 percent. This too is not a very serious problem though since a normal mobile phone or aadhaar based payments are also being made available.

Next is the shortage of POS machines-with only 856 POS machines per million Indians. There were 1.46 million POS machines in use in India-that is, 856 machines per million people-according to August 2016 Reserve Bank of India report. In 2015, Brazil-with a population 84 percent lower than India-had nearly 39 times as many machines (32,995), and the POS machine rate was 4,000 per million people in China and Russia. More than 70 percent of the POS terminals are installed in India's 15 largest cities, which contribute to more than 75 percent of transactions. As an incentive to banks and manufacturers of POS terminals, the governmement has waived 12.5 percent excise duty and 4 percent special excise duty on these machines, as it hopes to install an additional 1 million POS machines by March, 2017.

It's very evident taht the decision of demonetization was not taken in hurry, except that secrecy ahd to be maintained till the last

moment. Soon after assuming power, the government went for a drive to open zero balance Jan Dhan accounts for all. Various subsidies were to be transferred directly to these accounts as an incentive as also for reducing the middlemen's cuts. Till then only about 53% of the population had a bank account. Rupay cards were issued against these accounts as ATM cards. Simultaneously digital projects were launched to extend the reach of mobile and internet services. Aadhaar scheme of UIDAI (Unique Identification Authority of India) launched by the pevious government was accepted by the PM and given a mandate through the Parliament. Next came the one time exemption scheme to the tax evaders which had an expiry date of 30 September 16. However certain difficulties were unavoidable to the general public, and these were aggravated due to the manipulations of the corruupt, yet by and large a larger population of Indians has supported the measures in the hope that this would bring down the level of corruption wich is the biggest impediment for the progress of the nation.

■■■

भगवान शिव और पालनकर्ता विष्णु को श्रावण मास अत्यंत प्रिय है।

प्रो० (डॉ०) पी०पी० त्रिपाठी, बलरामपुर

भारतीय ज्योतिष में दिन, मास, वर्ष को वैज्ञानिक दृष्टि से ही परिभाषित किया जाता है। दिन (तिथि) एवं मास की गणना चन्द्र भ्रमण पर आधारित होती है, जबकि ऋतु, अयन, वर्ष एवं युग की गणना सूर्य के राशि चक्र भ्रमण पर आधारित होती है। प्रतिदिन सूर्य एवं चन्द्र के अन्तर का नाम दिन है। जिस दिन सूर्य एवं चन्द्र एक राशि में किसी एक बिन्दु में एक साथ होते हैं उसे अमावस्या कहते हैं। जब सूर्य व चन्द्र में 180 डिग्री का अन्तर होता है तो उसे पूर्णिमा कहते हैं।

सूर्य जब कर्क राशि में प्रवेश करते हैं तो उसे संक्रान्ति कहते हैं और इसी दिन से श्रावण मास प्रारंभ होता है। कर्क संक्रान्ति से ही सूर्य दक्षिणायन होते हैं। भारतीय गणना में प्रत्येक तीसरे वर्ष एक मास अधिक बढ़ जाता है जिसे अधिमास अथवा मलमास कहा जाता है। यह मास भगवान शिव को समर्पित होता है एवं यह भगवान विष्णु को भी प्रिय है। श्रावण से ही चतुर्मास का प्रारंभ होता है।

मासों में श्रावण तिथियों में त्रयोदशी (प्रदोष) और चतुर्दशी एवं वारों में सोमवार भगवान शिव को सर्वाधिक प्रिय है। इस मास एवं इन दिनों में शिव मंदिर में या अपने घरों पर मिट्टी का शिवलिंग बना कर पूजा–अर्चना की जाती है एवं रुद्राष्टध्यायी का पाठ किया जाता है। श्रावण में मंगलवार का भी विशेष महत्व है। श्रावण के मंगलवार को व्रत कर मंगलागौरी माँ का पूजन किया जाता है।

■■■

डॉ0 नि:शंक

हिन्दी साहित्य की विभिन्न शैलियों पर असाधारण अधिकार के पर्याय प्रतिभा को प्रणाम!

आ. डॉ0 नि:शंक

• **योगीन्द्र द्विवेदी,**
355 / 123, आलमनगर,
लखनऊ

हिन्दी साहित्य आज जिन ऊँचाइयों पर है, उसकी नींव में अतीत ही नहीं, वर्तमान में भी अनेक विद्वानों और मनीषियों का योगदान अप्रतिम है। इस गौरवपूर्ण परम्परा में वरिष्ठ साहित्यकार और कवि डॉ. लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निःशंक' का नाम अत्यंत आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। पाँच वर्ष पूर्व, 30 दिसम्बर, 2011 को वह हमारे बीच नहीं रहे। साँसों का थमना भी जीवन का कटु सत्य है, परन्तु जो इन साँसों को अपने अतुलनीय योगदान से कालजयी बनाते हैं, वे अमरता की श्रेणी में आते हैं। डॉ0 'निःशंक' ऐसी ही दुर्लभ साहित्यिक प्रतिभाओं में एक थे और निश्चय ही उनके अवसान से हिन्दी परम्परा के एक विस्तृत अध्याय पर पूर्णविराम लग गया है।

21 अक्टूबर, 1918 को भगवन्त नगर, हरदोई में जन्मे डॉ0 लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निःशंक' ने जीवन के लगभग सात दशक पूरी तरह हिन्दी सेवा को दिये। कविता, प्रबन्ध काव्य, निबन्ध, सम्पादन और संस्मरण आदि शैलियों में उन्होंने पद्य व गद्य दोनों में ही इतना कुछ रचा कि उनकी विविधता और स्तरीयता देखते ही बनती है। इनमें अवगाहन के बीच आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता कि एक ही समय में जीवन के कितने–कितने क्षेत्रों, उनके आरोह–अवरोह और मूल्यों को शब्द देने की विलक्षण प्रतिभा के वह धनी थे। खड़ी बोली हिन्दी के साथ–साथ उन्होंने ब्रज और अवधी जैसी बोलियों की यशस्वी पहचान में भी बहुत कुछ जोड़ा, भाषा विज्ञान को जीवित रखा और इस तरह आधुनिक हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बने।

डॉ0 लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निःशंक' के कृतित्व का एक अनुमान इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि उनकी लगभग दो दर्जन साहित्यिक पुस्तकें, कविता संकलन और बड़ी संख्या में लेख आदि हिन्दी साहित्य की अमूल्य

धरोहर है। इनमें 'सुमित्रा' प्रबन्ध काव्य और 'सिद्धार्थ का गृह त्याग', 'शांतिदूत', 'जयभरत', 'कर्मवीर भरत' और 'संकल्प की विजय' खण्ड काव्य अपनी उपमा आप हैं। आत्मकथा शैली में विभीषण पर केन्द्रित उनका 'प्रज्ञा उद्भास' खण्ड काव्य भी अत्यंत सराहनीय है। जहाँ तक मुक्तक काव्य का सम्बन्ध है, 'शतदल', 'क्रान्तिदूत', 'राना बेनी माधव', 'साधना के स्वर', 'अनुपमा', 'शंख की साँस', 'दर्पण', 'राम लला की किलकारी', 'मेरी आरम्भिक कविताएं' और 'तुणीर' आदि काव्य संकलन भी अत्यंत चर्चा में रहे।

उनके इन कविता संग्रहों ने पग–पग पर जीवन और समाज की अनेकानेक विसंगतियों और पहलुओं को देखना आह्लादित करता है। उनकी कविता की लयात्मकता देखते–पढ़ते ही बनती है और यह क्रम कहीं भी टूटता नहीं दिखता। स्पष्ट है कि निःशंक जी ने कविता को जिया था और अपने परिवेश को शब्द देने में इस असाधारण माध्यम का सुदपयोग करने में उन्हें भरपूर अधिकार प्राप्त था। उनके कविता संग्रह 'मेरी प्रारम्भिक कविताएं' की एक ऐसी ही कविता दृष्टव्य है। यह कविता छः दशक पहले 1942 में लिखी गयी थी और आज भी अपनी लयात्मकता की अलग छाप छोड़ती है। इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–''**दीप सा जीवन जला कर, ज्योति का दो दान/पत्थरों के तोड़ बन्धन, निर्झरों ने गीत गाया/उर्वरा करने धरा को, मेघ ने जीवन लुटाया/वृद्ध नगपति के शिखर से, हो रहा आह्वान!**''

ब्रजभाषा और अवधी के लिए उनका प्रेम देखते ही बनता था और इसके प्रमाण हैं उनके तीन कविता संकलन–'प्रेम पीयूष', 'बाँसुरी' और 'पुरवाई'। अवधी काव्य पर केन्द्रित उनके कविता संग्रह 'पुरवाई' में उत्तर भारतीय जीवन पग–पग पर मुखर होता है। समकालीन स्थितियों में आम आदमी किस बदहाली का शिकार है, चुनाव पर केन्द्रित लोकतंत्र कितना खोखला होता जा रहा है, इसका अनुमान कवि की इन पंक्तियों में सहज ही लगाया जा सकता है–''**आवा चुनाव आवा चुनाव, है गली–गली मां कांव–कांव/जी पांच साल तक उड़ति रहे उइ लिहे सहाबा घूमति हैं/जिनके दरसन का तरसि गएन, उइ घर–घर देहरी चूमति हैं/जी आसमान पर चढ़े रहैं, उइ सब धरती पर आए हैं/हमरी खातिन उइ कागद मां लिखि 'रामराज' फिरि लाए हैं/ई महंगाई के सागर मा, कैसेन कागद की चली नाव/आवा चुनाव, आवा चुनाव।**''

हिन्दी गद्य साहित्य को भी उनका योगदान अप्रतिम रहा। इस सन्दर्भ में निबन्ध संग्रह 'साहित्यकार का दायित्व' व संस्मरण संग्रह 'संस्मरणों

के दीप' का उल्लेख इसलिए भी किया जाना जरूरी है क्योंकि यह रचनाएं केवल एक महान हिन्दी सेवी और लेखक/कवि के प्रेरक व्यक्तित्व को ही सामने नहीं लातीं, अपितु इन शैलियों की उन ऊंचाइयों से भी परिचित कराती हैं जो अब लगातार दुर्लभ हो रही हैं। 'साहित्यकार का दायित्व' निःशंक जी का प्रतिनिधि निबन्ध संग्रह है और इसमें न केवल प्रभावपूर्ण गद्य पर उनकी पकडत्र स्पष्ट होती है बल्कि उनका प्रखर चिंक–व्यक्तित्व भी सामने आता है। इस निबंध संग्रह का एक निबंध है–'साहित्यकार का दायित्व'। इसमें प्रारम्भ में ही उन्होंने बहुत स्पष्ट शब्दों में साहित्यकार के वास्तविक दायित्व को पाठक के सामने रखा है–''सच्चा साहित्यकार किसी न किसी महान उद्देश्य से प्रेरित होकर रचना में प्रवृत्त होता है। वह युगीन प्रवर्तनों से विक्षुब्ध समाज के सुख–दुख में अपने को ऐसा लीन कर देता है कि उसकी अभिव्यक्ति जन–जन के मन का स्पर्श कर उसे अपना बना लेती है। महान साहित्यकार केवल युग की विषमताओं का यथार्थ चित्रण ही नहीं करता और न उनकी सूची ही तैयार करता है, वरन् वह उनका ऐसा समाधान भी ढूँढ निकालता है जो जन–जीवन को अनुप्राणित करता है।.. सार्वभौमिकता का सिद्धान्त मानने वाला साहित्यकार देश, जाति और सम्प्रदाय के बंधनों को तोड़ कर आगे बढ़ता है तथा समस्त मानवता का अग्रदूत बन जाता है।

इसी निबंध में एक अन्य स्थान पर निःशंक जी ने विनय के महत्व को जिस सहजता से शब्द दिये हैं, वह असाधारण है। उन्होंने लिखा है–'महान् व्यक्ति वह नहीं होता, जिसके सम्मुख जाने पर हम अपने को छोटा अनुभव करें। वही व्यक्ति महान होता है, जो हमारे भीतर की लघुता का संकोच दूर कर हमें अपनी महत्ता में सहभागी बना ले। साक्रिटीज ने अपना चित्र बनवाते समय चित्रकार से कहा था–''मैं जैसा हूँ, वैसा ही मेरा चित्र बनाना, जिसमें मेरे चेहरे पर बनी झुर्रियाँ साफ दिखाई दें।''

'संस्मरणों के दीप' में निःशंक जी का सरल–निश्छल व्यक्तित्व असीमित ऊँचाईयों को छूता है। इसमें उनके समकालीन अनेकानेक वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ बीते पलों/घटनाओं का विवरण अत्यंत उच्च कोटि का है। अपने निबंध 'संस्मरण' में उन्होंने स्वयं लिखा है–''सहृदय लेखक संस्मरण लिखते समय अपने आप को तटस्थ रख कर स्मरणीय व्यक्ति के गुणों, कमजोरियों व उसके अंतरंग चरित्र का उद्घाटन करता है। जब लेखक और स्मरणीय व्यक्ति दोनों समान स्तर पर चित्रित किये जाते हैं तो उस व्यक्ति के चरित्र का लेखक से पृथक् करना एक कठिन कार्य हो जाता है। संस्मरण केवल व्यक्तित्व पर ही प्रकाश नहीं डालते वरन् उनके द्वारा युग की मान्यताओं, प्रवृत्तियों, आदर्शों और परम्पराओं का भी उद्घाटन होता है। इतिहास लेखक को उससे सहायता मिल सकती है। जिन बातों को कोई

महापुरुष या साहित्यकार स्वयं नहीं करता है या जिन्हें संकोचवश छिपाये रहता है, उन्हें संस्मरण लेखक व्यक्त कर देता है। इससे उसका व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है और वह अधिक प्रभावशाली बन जाता है।''

ऐसे में स्वाभाविक रूप से अपने संस्मरणों में निःशंक जी ने विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखा है कि कहीं पर भी उनका अपना व्यक्तित्व आरोपित न हो। हरिऔध जी हो या सनेही जी, महादेवी वर्मा हो या हजारी प्रसाद द्विवेदी, भईया जी हो या रामकुमार वर्मा और पंत जी या उनके समकालीन अन्य प्रतिष्ठित रचनाकार–सभी से जुड़े प्रत्येक संस्मरण में निःशंक जी की कोशिश यही रही है कि सम्बन्धित साहित्यकार और घटना विशेष के मानवीय पहलुओं को ही उजागर किया जाए और इस महान कार्य में कहीं पर भी उनका अपना निजी व्यक्तित्व महिमामंडित न होने पाय। एक ऐसी सरलता जो केवल महान और प्रेरक व्यक्तित्वों द्वारा ही सम्भव हो सकती है। अधिकतर संस्मरणों में निःशंक जी प्रायः अपने बारे में कुछ नहीं कहते और यदि कहीं आवश्यकता पड़ी भी, तो भी, कम से कम शब्दों में उन्होंने घटना विशेष के दौरान अपनी उपस्थिति का उल्लेख किया है। उनका यह कुछ न कहना या कम से कम कहना उन्हें महान साहित्यकार की श्रेणी में निर्विवाद रूप से स्थापित करता है।

डॉ0 निःशंक ने विस्तृत साहित्य सेवा के दौरान 'माधुरी', 'ज्योति' और 'सुकवि विनोद' जैसी स्तरीय पत्रिकाओं के सम्पादन में भी अपनी छाप छोड़ी। 'सुकवि विनोद' के माध्यम से उन्होंने लगभग एक दशक तक ब्रज और अवधी कविता की प्राचीन परम्परा को न केवल जीवित रखा, बल्कि अनेक रचनाकारों को भी प्रकाशन का अवसर देकर उन्हें स्तरीय पहचान दी। वह अत्यंत व्यवस्थित ढंग से साहित्यिक गतिविधियों में लीन रहा करते थे और इसका एक उदाहरण वे पत्र भी हैं जो उन्हें अन्य प्रमुख साहित्यकारों ने समय–समय पर लिखे थे। ऐसे पत्रों में कुछ छः दशक तक पुराने हैं। इनमें से अधिकतर को उन्होंने 'साहित्यकारों के पत्र मेरे नाम' संग्रह में संग्रहीत किया है। इन पत्रों से गुजरते हुए ऐसा लगता है मानो पाठक स्वयं दो महान विभूतियों के कहीं आसपास हो और उनके आत्मीय वार्तालाप का दुर्लभ आनन्द ले रहा हो। इस संकलन का प्रकाशन उस पत्र–विधा की ऊँचाइयों को भी रेखांकित करता है जो अब लगातार सिमटती जा रही है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित 'साहित्यिक अवधी भाषा

कोश' और हाल ही पुस्तकाकार आयी 'छंद प्रभाकर' के भी वह सम्पादक रहे। स्तरीय पत्रकारिता के प्रति उनका लगाव था और इसका एक प्रसंग उनके निबंध संग्रह 'साहित्यकार का दायित्व' में संकलित निबंध 'साहित्यकार की विनय' में दिखता है। इस निबंध में निःशंक जी ने सम्पादकाचार्य पंडित अम्बिका प्रसाद बाजपेयी के एक संस्मरण का उल्लेख किया है। पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने तुलसीदास पर एक पुस्तक लिखी थी। बाजपेयी जी ने उसकी कड़ी आलोचना लिखी थी, जिसके चलते त्रिपाठी जी अर्से तक नाराज रहे थे। फिर भी, जब एक बार लखनऊ में बाजपेयी जी से उनका सामना हुआ तो एक पल की भी देर किये बिना सम्पादकाचार्य ने उन्हें गले लगा लिया और बोले–''मैं एक बेपढ़ा–लिखा आदमी हूँ, जो मेरी समझ में आया लिख गया। आप साहित्यकार हैं और मैं एक मामूली पत्रकार रहा। मैं स्वयं मानता हूँ कि मैंने अनधिकार चेष्टा की थी।'' 'विद्या ददाति विनयम्' का यह एक असाधारण दृष्टांत है और ऐसे अनेकानेक संस्मरण उनकी रचनाओं में प्रायः दिखते हैं। कविता हो या गद्य लेखन–कहीं भी वह आरोपित नहीं है और उनकी लेखनी में मानवीय सरोकारों को शब्द देने की जो ललक प्रारम्भिक कविताओं में दिखती है, वह अन्त तक अबाध गति से जारी रही और निःशंक जी की यह स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ उनके विराट् कवि और साहित्यकार व्यक्तित्व को अत्यंत सहजता से मुखर करती हैं।

इस विहंगम साहित्य सेवा के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत भारती' सहित अनेकानेक पुरस्कार मिले। इनमें पं. श्रीधर पाठक नामित पुरस्कार, मानस संगम पुरस्कार और समय–समय पर मिलने वाले अनेकानेक अन्य पुरस्कार शामिल हैं। डॉ0 निःशंक का जीवन प्राध्यापन में बीता और इस अवधि में उन्होंने हजारों शिष्यों को जीवन जीने और उसमें भाषा व साहित्य के योगदान का सलीका भी सिखाया। अन्त समय में भले ही कुछ समय से उनकी लेखनी अवरुद्ध रही हो, वह निरंतर अध्ययन–मनन और लेखन को समर्पित रहे। स्पष्ट है कि निःशंक जी ने अपने अत्यंत व्यवस्थित जीवन में कविता, निबंध संस्मरण, पत्रकारिता, शिक्षण और चिंतन को जिन ऊँचाइयों पर जिया, उन तक रिबले ही पहुंच पाते हैं। हिन्दी साहित्य की कालजयी यशस्वी परम्परा के अमूल्य हस्ताक्षर–डॉ. लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निःशंक' की पुण्यस्मृति में शत्–शत् प्रणाम्!

■■■

श्यामल काया, गोरी छाया

• तिलक शुक्ला
रायबरेली

काया ने पूछा "तुम कहाँ"

छाया बोली "तुम मेरे सर्वस्व जहाँ" (पंचवटी)

काया चाहे जैसी हो, छाया हमेशा श्यामल ही होती है। काया और छाया का संबंध विश्रुत है। छाया काया का अनुसरण करने को विवश है। कहते हैं बुरे समय (अंधकार) में छाया भी साथ छोड़ देती है। परंतु राम की यह छाया इन सभी 'छाया गुण–धर्मों' का अपवाद है। यह छाया है पर गौरांग है, विवश न होते हुए भी इसने सदैव अनुगमन किया। कठिन समय में और अधिक सघन हो उठती थी। यह छाया सेवा–धर्मी है। रात्रि में जब अन्य छायाएं लुप्त हो जाती हैं, यह छाया काया की सुरक्षा हेतु कुछ दूर 'भोगी कुसुमायुध योगी सा' वीरासन में सन्नद्ध दृष्टिगत होती है।

श्रंगवेरपुर में जब निषाद राम को जमीन पर पत्तों पर सोते देख दुखित होते हैं तो 'कोऊ न काहू सुख–दुख कर दाता' बता कर, सुख और दुख को मात्र मन की भावनायें बता कर निषाद के विषाद का शमन करते हैं। ऐसी ज्ञानी छाया अरण्यकांड में काया से प्रश्न करती है– "कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया" 13/4।। और श्री राम के बताने पर– "भगति जोग सुनि अति सुख पावा"। इस "भक्ति–योग" का जैसा पालन, निर्वहन लक्ष्मण ने किया वैसा संभवतः किसी ने नहीं किया होगा। लक्ष्मण भक्ति में 'विदेह' हो गये। विदेह कहे जाने वाले जनक तो सीता के दुख से पीड़ित हो उठे थे, परंतु मेघनाद के बाण के प्रहार से लक्ष्मण को तनिक भी वेदना नहीं हुई। उनकी पीड़ा मात्र इतनी ही थी की "चोट मोहे पीर रघुबीरहिं" (कवितावली)।

हालाँकि भरत के चरित्र पर संदेह करना शास्त्रों में वर्जित है, फिर भी भरत के प्रेम में लौकिक व्यवहार व राजनीति की संभावना हो सकती है, परंतु लक्ष्मण...उनके साथ ऐसा कुछ नहीं था। वह निर्लिप्त रह कर अयोध्या में ही

बने रहते। लक्ष्मण की उपस्थिति संभवतः दशरथ की मृत्यु कुछ समय तक निवार सकती थी। परंतु यह छाया–धर्म के अनुकूल नहीं था। सो अपनी सद्य–विवाहिता पत्नी और असहाय माँ को छोड़ श्यामल काया के पीछे–पीछे चल दिये।

जैसा कि गीता में कहा गया है कि भक्ति–योगी, कर्म–योगी भी होता है। वह अपना 'कर्तव्य–कर्म' अपने इष्ट की आज्ञा मान कर करता है। फल की ओर तो उसकी दृष्टि ही नहीं जाती क्योंकि वह श्रीचरणों में ही रमी रहती है। इसलिए उसके कर्म प्रारब्ध से भी मुक्त होते हैं और भक्त मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

राम को तो शायद 'परित्राणाय साधूनाम्' हेतु पुनः अवतार लेना पड़ सकता है परंतु उनकी छाया पर ऐसी कोई विवशता नहीं है परंतु भक्त का ध्येय मात्र उसका आराध्य है। वह मोक्ष तो उसके किसी काम का नहीं जो उसे अपने आराध्य से मुक्त कर दे। अतः वह श्यामल काया के साथ गोरी छाया के रूप में फिर जन्म लेता है, परंतु इस बार अग्रज के रूप में। इस जन्म में भी उनकी भक्ति "सायुध होंहि कि आयुध हीना, विजय सदा मम श्याम अधीना'' में अग्रज का स्नेह, भक्ति, भक्त की ममता और विश्वास एक छोटे से शब्द 'मम' में परिलक्षित हो जाती है।

कुछ लोगों का कहना है– राम जब भी, जिस किसी से भी उपकृत हुए, उसे 'भरत सम भाई' कहा और लक्ष्मण की उपेक्षा की। कितने अनजान है हम सब। लक्ष्मण इन सब से ऊपर थे। कहीं छाया से भी कोई बढ़ कर हो सकता है? छाया तो अपनी होती है....सिर्फ अपनी। राम के लिए लक्ष्मण 'भ्रातृः स्वमूर्त आत्मनः' ही थे। उनकी तुलना किसी से हो ही नहीं सकती।

छाया मात्र छाया है वह महान कैसे हो सकती है, काया छाया का गुणगान ऐसा कभी सुना गया? जी हाँ, शक्ति लगने से लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम कहते हैं "छोटा भाई होते हुए भी इसने सदैव पिता की भाँति संरक्षण किया''

राम कथा के मूल–ग्रंथ 'वाल्मिकीय रामायण' में लक्ष्मण का चरित्र गोस्वामी जी के 'मानस' से भिन्न है। मानस में राम के बाद हनुमान एवं भरत का ही महिमा मंडन है। लक्ष्मण क्या सीता को भी वह स्थान नहीं नहीं है, जिसकी वह अधिकारिणी थीं। परंतु यह (तुलसीदास जी) भक्त की विवशता

है। उसकी दृष्टि में आराध्य के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। वाल्मीकि के लक्ष्मण मात्र छाया न हो कर कवच भी थे। राम जब–जब हताश हुए (नर–लीला में ही सही) लक्ष्मण ने उन्हें सांत्वना दी, सहारा दिया। लक्ष्मण तब ही उग्र होते थे, जब कुछ भी राम के विपरीत होता था।

रावण से विक्षुब्ध हो कर विभीषण जब राम की शरण आते हैं। तमाम वर्जनाओं को नकारते हुए राम उन्हें 'मम पन सरनागत भयहारी' कह कर स्वीकार करते हैं और 'लंकापति' बना देते हैं। काया के शरणागत होते ही विभीषण छाया के संरक्षण में स्वतः आ गये। जब क्रुद्ध रावण विभीषण के वध हेतु अमोघ शक्ति का प्रयोग करता है तो लक्ष्मण ने विभीषण को अपने पीछे कर उस शक्ति को अपने ऊपर झेल कर काया के 'पन' की रक्षा करते हैं। भक्ति का मार्ग सहज नहीं होता।

छाया पर कुछ अपकार्यों के लांछन भी लगे। ध्यातव्य है कि भक्ति योग में कर्मों में विवेक का स्थान ही नहीं है। भक्त में 'कर्ता भाव' का पूर्ण अभाव होता है। क्या भला है, क्या नहीं यह उसके क्षेत्र में है ही नहीं। उसका स्वयं का जीवन क्या...वह तो विदेह होता है। जब 'कर्ता' है ही नहीं तो कर्म किस प्रकार शुभ या अशुभ हो सकता है– फिर चाहे वह शूर्पणखा का श्रवण–नासाच्छेदन हो या सीता के परित्याग में सहायक होना।

कहते हैं आसन्न मृत्यु पर काया की छाया लुप्त हो जाती है। छाया का दिखना बंद हो जाता है। जब काया नहीं तो छाया का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। परंतु राम कथा में इसका उलटा हुआ। छाया के न रहने पर काया लुप्त हुई। इसी लिए गोस्वामी जी का मानना है की 'भक्त–वत्सलता' में श्री राम अप्रमेय हैं।

काल से वार्ता के समय व्यवधान उत्पन्न करने के अपराध में लक्ष्मण प्राण–दंड के अधिकारी हो गये। राम लक्ष्मण को प्राण–दंड कैसे देते? 'रघुकुल–रीति' में व्यवधान न हो हो अतएव लक्ष्मण ने स्वयं सरयू की शरण ली। छाया के लुप्त होने पर काया को भी जाना पड़ा (अद्यैवाहं गमिष्यामि लक्ष्मणेन गतां गतिम्) और अयोध्या में सरयू का एक घाट 'गुप्तार घाट' के नाम से वैष्णवों का तीर्थ बन गया।

'छाया–धर्मी भक्तशिरोमणि' वीरवर लक्ष्मण को सादर नमन !

■■■

यादों की मुस्कान

तेरी एक मुस्कान ने जाने कितने फूल खिलाये थे।
तेरी अठखेलियों में हमने बिछड़े सावन पाये थे।
तेरे बचपन ने मानो दिन अपने बचपन के लौटाये थे।

तेरे खिलते बचपन की ये दरो दीवार भी साझी है।
तेरे बढ़ते कदमों ने अब डग चौखट की लाँघी है।
तेरे मन उफन रही अब उम्मीदों की आँधी है।

आशाएं ले परवाज तभी भी पाँव धरा पे जमे रखना
जीवन की उतरती चढ़ती ढलानों पर
खुद से मिलने का समय रखना।
चाहे पार करे तू सात समुन्दर, दिल से न परे हमें रखना।
क्यों कि जीवन की ढलती बेला में, भले हाथ हमारा मत थामो।
तेरी यादों की मुस्कानों का हमें भी हिस्सा होना है।

यादें

वक्त की दौड़ में हाथ छूटा तो है
पर वो आज भी यादों की गहराइयों में मौजूद है।
अलमारी में बंद पड़े कपड़ों की महक
चौके में उन बरतनों की उठापटक
उनके बचाये हुये कुछ सिक्कों की खनक में
आज भी बसा उनका वजूद है।
बस इस आस में अपने टूटे हुये
दिल को संभाल लेता हूँ
कि शायद ऐ ऊपर वाले
वो तेरी रहमत में ज्यादा महफूज है।।

–मुक्ता द्विवेदी

■■■

स्केप–गोट या बलि का बकरा

• तिलक शुक्ला,

यह एक बहुचर्चित और बहु–प्रचलित मुहावरा है जो लगभग सभी भाषाओं मे प्रयोग होता है। किसी के अपराध को किसी और को आरोपित कर दंड देने को 'बलि का बकरा बनाना' या 'दूसरे के सिर ठीकरा फोड़ना' कहते हैं। जबसे मानव ने सभ्य(?) होना प्रारम्भ किया, तब ही से यह कहावत चली आ रही है। आदि काल से धारणा चली आई है कि जब समाज में पाप का आधिक्य हो जाता है देवता नाराज हो जाते हैं और समाज को दंड के लिए आपदायेँ (ईति) भेजते हैं। प्राचीन यहूदियों पर अकाल, महामारी ऐसी आपदा जब आती थी तो पुजारी ऊँची वेदी पर एक बकरे को खड़ा करता था। उसके सिर पर हाथ रख कर समाज के सारे पाप बकरे के सिर पर स्थानांतरित कर देता था, जिसके बाद बकरे का सिर काट दिया जाता था। समाज बकरे की बलि कर अपने पापों से मुक्त हो जाता था। एक बार स्वयं ईश्वर ने कुर्बानी की वेदी पर लेटे बालक की जगह दुम्बे को रख कर बालक की जान बचाई। शायद ईश्वर की इसी करुणा के बाद से यह मुहावरा चल निकला।

यूनान राज्य मे भी कुछ नाकारे युवक रखे जाते थे। इनकी परवरिश का जिम्मा राज्य का होता था। दैवी प्रकोप होने पर इन्ही लोगों की बलि दे कर देवताओं के कोप का शमन किया जाता था। यहीं से नर–बलि का सूत्रपात हुआ जो कि मानव इतिहास की सबसे घृणित कुरीतियों मे गिनी जाती है।

इस धार्मिक रीति का राजनीति मे प्रयोग करने की सीख देने का पहला श्रेय 15 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध राजनीति विचारक 'माकियावेली' को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'द प्रिंसेज' मे सीख दी कि प्रत्येक शासक को सारे सही फैसलों का क्रेडिट स्वयं लेना चाहिए और गलत निर्णय को अपने सबसे नजदीकी सहयोगी पर थोप कर उसे सूली पर लटका देना चाहिए, ताकि आप की छवि हमेशा ऐसी बने कि आप कभी गलती नहीं करते और गलती करने वालों को नहीं बख्शते। जनता के सामने छवि का निर्मल होना बहुत जरूरी है।

ईडीपस के राज्य मे जब महामारी का प्रकोप हुआ तो उसने पापियों के नाम पर सैकड़ों निर्दोषों को मरवा डाला जबकि वास्तविक incest (निकट संबंध मे यौन–संबंध) महापाप का दोषी वह स्वयं था।

अंग्रेजों ने इसको एक कला के रूप मे इस्तेमाल किया। अपने जुल्मों और कुशासन का आरोप वह हिन्दुस्तानी राजाओं और नवाबों पर डाल, उन्हें अपदस्थ करने का षड्यंत्र रचने में वह इतिहास में अद्वितीय थे। मीरजाफर, मीरकासिम, वाजिद अली शाह हमें अभी भी याद हैं।

कठपुतली सरकार का प्रयोग भी अंग्रेजों ने शुरू किया और आजाद भारत मे भी हम सभी इससे परिचित है। पर्दे के पीछे के धागे किसके हाथ हैं सभी जानते थे पर दोषारोपण मात्र कठपुतली का हुआ।

परिवारों मे भी यही चीज देखने को मिलती है। मनमुटाव का बीज (सिबलिंग राइवाइलेरी, ईर्ष्या) पुरुषों के हृदय मे होता है पर, परिवार–विग्रह का लांछन महिलाओं के सिर जाता है।

■■■

Five Undeniable Facts of Life

1. Don't educate your children to be rich. Educate them to be Happy. So when they grow up they will know the value of things not the price.

2. Best awarded words in London ...
"Eat your food as your medicines, Otherwise you have to eat medicines as your food."

3. The One who loves you will never leave you because even if there are 100 reasons to give up he or she will find one reason to hold on.

4. There is a big difference between a human being and being human. Only a few really understand it.

5. You are loved when you are born. You will be loved when you die. In between, You have to manage!

If you just want to Walk Fast, Walk Alone! But if you want to Walk Far, Walk Together!

Six Best Doctors in the World

1. Sunlight	2.Rest	3.Exercise
4. Diet	5.Self Confidence	6.Friends

Maintain them in all stages of Life and enjoy healthy life.

■■■

श्रद्धांजलि

श्रद्धेय भाई साहब

• डॉ. डी.एस. शुक्ल
(सुहृद)

राम कृष्ण दीक्षित

कर्मशील, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, आदि गुण एक साथ एक व्यक्ति में मिलना मुश्किल है। यदि किसी में यह गुण एक साथ होंगे भी तो वह अव्यवहारिक और आत्म केन्द्रित होगा। मगर श्री रामकृष्ण दीक्षित जी में यह सब विशेषताएं होते हुए भी वह एक व्यावहारिक व्यक्ति थे और आजीवन दूसरे की सहायता को तत्पर रहे। नाम के अनुरूप उनमें कृष्ण की दूरदर्शिता और राम सा धीरज था।

बाल्यावस्था में गाँव के छोटे से स्कूल में पढ़ते हुए उन्होंने विचार किया कि विज्ञान का अध्ययन समय की माँग है, जिसके लिए अंग्रेजी का ज्ञान होना परम आवश्यक है। परंतु उस समय गाँव जमींदार श्रीराम मिश्र, जो कि पेशे से वकील भी थे अंग्रेजी एक मात्र जानकार थे। इतने बड़े आदमी से अंग्रेजी पढ़ाने का अनुरोध करना एक बालक के लिए सागर–लंघन से कम नहीं था। फिर भी मिश्र जी इनकी लगन देख कर इनके प्रथम गुरु बने।

आगे की पढ़ाई उन्नाव और कानपुर में हुई जहाँ ट्यूशन करके वह अपना खर्चा निकालते थे। छात्र जीवन में तत्कालीन प्रदेश के मूर्धन्य नेता पडित विशंभर दयालु त्रिपाठी के संपर्क में आकर छात्र नेता के रूप में जेलयात्रा भी की मगर फिर, अध्ययन को प्राथमिकता मान बी.एस.सी. करने के बाद एम.एस.सी. फिजिक्स में एडमिशन लिया।

जिस प्रकार नदी की धारा किसी भी रुकावट से नहीं रुकती और नई दिशा की ओर मुड़ जाती है, उसी भांति रामकृष्ण के जीवन में लगातार दुर्घटनाएं आती रहीं। इन दुर्घटनाओं ने इनका विकास बाधित कर नई दिशा की ओर मोड़ा। एम.एस.सी. की परीक्षा के दौरान ही इनका एक्सीडेंट हो गया जिससे पूरी परीक्षा नहीं दे सके। एक साल बर्बाद न हो अतः वे रोजगार परक

'पैन–ब्वायलर' का कोर्स करके काशीपुर में कार्यरत हो गए। बाद में कानपुर के मशहूर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट से एन.एस.आई. करके उसी कालेज में टेक्नोलोजिस्ट बनकर आजीवन वहीं अध्यापन करते हुए पूरे भारत की शुगर फैक्ट्रियों के टेक्निकल एडवाइजर के रूप में विख्यात हुए।

दायित्व निर्वहन–भाई साहब के व्यक्तित्व का सबसे प्रदीप्त गुण, इनका अपने दायित्व का बोध और उसका निर्वहन था। कुछ लोग कहने पर दायित्व ग्रहण करते हैं, पर इनके ऐसे व्यक्ति जहाँ भी होते हैं दायित्व स्वतः उन पर आ जाता है। अपने भतीजों के साथ ही इन्होंने अपनी पत्नी की बहनों की भी शिक्षा एवं विवाह का दायित्व निबाहा जिसके कारण वे कन्याएँ और उनके पति भी इन्हें आजीवन पिता–तुल्य सम्मान देते रहे।

यह 60 का दशक था जिसमें सारे भारत में नई–नई शुगर फैक्ट्रियाँ खुल रही थीं और एनएसआई के शुगर टेक्नोलोजिस्ट की बहुत डिमांड थी। भाई साहब के अनेक साथी मोटे पे–पैकेज पर इंस्टीट्यूट छोड़कर 'बडिंग शुगर इंडस्ट्री' ज्वाइन करके लखपती बन गये। परन्तु भाई साहब अपने पारिवारिक दायित्वों को आती हुई लक्ष्मी से ज्यादा महत्वपूर्ण मानकर आजीवन साधारण सैलरी पर इंस्टीट्यूट में ही बने रहे।

इंस्टीट्यूट में ही बने रहने से इनका उतना आर्थिक लाभ तो नहीं हो सका, किन्तु टीचिंग–इंस्टीट्यूट में रहने के कारण इन्हें जितना सम्मान मिला वह इनके धनकुबेर साथियों से बहुत अधिक था। इनके पढ़ाये शिष्य भारत में ही नहीं पूरे विश्व के शुगर प्रोड्यूसिंग देशों में कार्यरत थे, जो इन्हें आजीवन सम्मान देते रहे।

एनएसआई में रहते हुए इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास कर ली। यह वकालत की डिग्री इन्हें सेवा–निवृत्ति के बाद काम आई। थोड़े ही समय में दीक्षित जी कानपुर बार के सफल और सक्रिय सदस्य बन गये। मगर एक बार फिर से दुर्घटनाओं ने इनका मार्ग बाधित किया। अक्टूबर 1990 में इन्हें हेड इंजरी हो गई और वे महीने भर कोमा में रहे।

यह परिवार के लिए बहुत ही कठिन समय था। पूरे प्रदेश में 'अयोध्या–कांड' की वजह से कर्फ्यू लगा था, केमिस्ट शाप्स बंद, कहीं भी आना जाना मुश्किल था। फिर भी अपने सत्कर्मों और सुहृदों के सहयोग से कानपुर से लखनऊ लाये गये जहां प्रसिद्ध न्यूरो–सर्जन डा. दवे ने आपरेशन

कर इन्हें एक बार फिर खड़ा कर दिया।

सभी बच्चे सेटेल हो चुके थे कुछ सुख के दिन आए ही थे कि 1997 में एंजियोप्लास्टी और फिर 2008 में एक और दुर्घटना में कूल्हे की हड्डी टूट गई। एक बार रि आपरेशन हुआ और अपने आत्मबल से इन्होंने 80 वर्ष की आयु में पुनः पूर्ण स्वास्थ्य–लाभ प्राप्त कर लिया।

परंतु भाग्य हर बार साथ नहीं देता...जो आया है उसको जाना ही होता है। जन्म के बाद यदि कुछ निश्चित है तो वह मृत्यु ही है। इससे कोई बच नहीं सकता। इन्हें एक बार फिर चोट लगी जो इस शाश्वत सत्य को साबित करने का बहाना बनी। डाक्टर बेटे की सबसे उन्नत अस्पताल में देखरेख के बावजूद 3 नवम्बर 2016 को पुराने वस्त्र की भाँति जीर्ण शरीर को त्याग कर चल दिये।

ऐसे कर्मशील, परोपकारी व्यक्ति शोक करने योग्य नहीं होते, फिर भी अपनों को कष्ट तो होता ही है। मगर हम सब यह सोच कर संतुष्ट हो लेते हैं कि भले लोगों की भगवान को भी जरूरत होती है।

■■■

नमन
जो हमसे बिछड़ गये

1 सूबेदार पी. एल द्विवेदी पिता 'वाणी सदस्य' प्रवीण द्विवेदी।
2. उषा शुक्ला पत्नी 'वाणी पुत्र' स्व. डॉ. यूडी शुक्ला।
3. आरके दीक्षित पिता डॉ. अनुराग दीक्षित 'सह संपादक' कान्यकुब्ज वाणी ।
4. यतीन्द्र त्रिपाठी पुत्र श्री जेके त्रिपाठी, 'उपाध्यक्ष' अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा।
5. सत्यवती दीक्षित माँ ई. सत्यानंद दीक्षित सह संपादक कान्यकुब्ज वाणी।
6. सावित्री मिश्रा पत्नी श्री राम जी मिश्रा 'अति विशिष्ट सदस्य' कान्यकुब्ज वाणि।
7. सरोज शुक्ला पत्नी 'वाणी पुत्र' श्री पी एस शुक्ल, माँ 'वाणी पुत्र' श्रीमती रोली तिवारी।
8. महेश शुक्ला, रायबरेली, पैत्रज (कज़िन) डॉ.डी. एस शुक्ल।

■■■

स्व. डॉ. विमल भट्टाचार्या

डॉ. विमल भट्टाचार्या

जीवन में मुख्य लक्ष्य ''कर्म ही पूजा'' है इस सिद्धान्त को मानते हुए पूरी जिन्दगी गरीबों की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत करने वाले विमल जी का जन्म कन्नौज जनपद में 21 अप्रैल 1951 को एक संभ्रांत परिवार में हुआ था'' उनके पिता स्वर्गीय अमर नाथ भट्टाचार्या वकालत पेशे में थे उनका सपना था कि विमल जी एक डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करें।

हाई स्कूल तक कन्नौज में शिक्षा प्राप्त कर लखनऊ में कान्यकुब्ज कॉलेज से इन्टर कर के. जी.एम.सी. से एम.बी.बी.एस. और पोस्ट ग्रेजुएशन किया।

प्रान्तीय सेवा में नौकरी करते हुए 1976 में विमल जी विवाह लखनऊ में आई.आर.एस. स्वर्गीय कैलाश नाथ मिश्रा जी पुत्री अलका से सम्पन्न हुआ। अलका के दो भाई हैं। बड़े भाई आदित्य प्रकाश मिश्रा रेलवे बोर्ड के मेम्बर और छोटे भाई अरुण प्रकाश मिश्र लखनऊ में इनकम टैक्स और सेल्स टैक्स की प्रैक्टिस करते हैं। विमल जी की दो पुत्रियाँ हैं, बड़ी पुत्री डॉक्टर अम्बिका बाजपेई नवयुग डिग्री कॉलेज प्रवक्ता हैं, उसके पति डॉक्टर प्रदीप जो इंजीनियरिंग कॉलेज में डायरेक्टर पद पर हैं, उनके एक पुत्र रत्निन एवं पुत्री पौलोनी हैं।

छोटी पुत्री अनुप्रिया अवस्थी हैं जो एक प्रतिष्ठित कम्पनी में उच्च पद पर हैं उसके पति आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में हैं। विमल जी एक आशावादी व्यक्तित्व वाले इंसान थे वह खाली गिलास को देखकर कहते थे कि आधा भरा तो है। बलरामपुर अस्पताल लखनऊ से सेवानिवृत्त हुए, संगीत और पुस्तक पढ़ने का उनको बहत शौक था।

दया, करुणा, ईमानदारी, शालीनता इन गुणों से परिपूर्ण इस धरा से अल्पायु 63 साल में 26 जनवरी 2015 को इस दुनिया से चले गये।

''आसमाँ पर एक सितारा शाम से बेताब है,

मेरी आँखों में तुम्हारा ग़म नहीं ख्वाब है।''

श्रीमती अलका भट्टाचार्या

पं. गेंदा लाल दीक्षित

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योद्धा, महान क्रान्तिकारी व उत्कृष्ट राष्ट्रभक्त, आदर्श प्रतिभावान शिक्षक उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों के द्रोणाचार्य

जन्म और बचपन

पं. गेंदालाल दीक्षित माघ बदी 5, विक्रम संवत् 1947, तदनुसार नवम्बर 30, सन् 1888 ई., को आगरा जनपद की तहसील बाह के निकट ग्राम मुई में गोत्र शांडिल्य, अंटेर के दीक्षित, समाधान के असामी, वेद साम, वाम–शिखा व वाम पाद में पं. भोलानाथ दीक्षित जी के यहाँ जन्म हुआ था। यह मुई गाँव बटेश्वर के निकट बसा हुआ था। पं. गेंदालाल जी की आयु लगभग 3 वर्ष की ही रही होगी जब उनकी माता जी का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया था, बिना माँ के बच्चे का जो हाल होता है वही हाल गेंदालाल जी का भी हुआ। हमजोली बच्चों के साथ निरंकुश निर्द्वन्द्व खेलते–कूदते कब उनका बचपन बीत गया पता ही न चला, परन्तु एक बात अवश्य हुई कि बालक गेंदा लाल के अन्दर प्राकृतिक रूप से अप्रतिम प्रतिभा, दूरदर्शिता, राष्ट्रप्रेम एवं वीरता का भाव निरन्तर प्रगाढ़ होता चला गया।

अध्ययन और अध्यापन

अपने जन्म स्थान ग्राम मुई के प्राथमिक विद्यालय से हिन्दी में प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण कर इटावा जनपद से मिडिल कक्षाएं उत्तीर्ण की और आगरा से मैट्रीकुलेशन स्तर की शिक्षा उच्च अंकों से उत्तीर्ण कर पूरी की आगे की पढ़ाई करने की उनकी तीव्रतम इच्छा थी परन्तु आर्थिक संसाधनों की कमी तथा अन्य पारिवारिक कठिनाईयों के कारण परिस्थितिवश उत्तर प्रदेश के वर्तमान जनपद औरैया (तत्कालीन जनपद इटावा की तहसील औरैया) की ए.वी. पाठशाला में अध्यापक हो गये। गेंदालाल जी शिक्षक होने के साथ साथ स्वाध्याय करते हुए हिन्दी के साथ–साथ उर्दू बंगला एवं संस्कत भाषा के कुशल ज्ञाता बने। सन् 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद जो देशव्यापी स्वदेशी आन्दोलन चला उससे राष्ट्र भक्त पं. गेंदालाल जी भी अछूते नहीं रहें जिससे वह अत्यधिक प्रभावित हुए, तथा स्वदेशी आन्दोलन को गति प्रदान करने में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

क्रान्तिकारी जीवन

पं. गेंदालाल जी क्रान्तिकारी विचारों से ओतप्रोत होने के कारण तथा 'बाल गंगाधर तिलक' के राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी प्रेरक पाथेय, उद्घोष जैसे

'स्वतन्त्रता हमा जन्म सिद्ध अधिकार है' तथा तिलक जी द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं तथा साहित्य का निरन्तर अध्ययन करने के कारण वह उनकी जीवन शैली तथा उनके राष्ट्र प्रेम एवं क्रान्तिकारी विचारों से अत्यन्त प्रभावित होने के कारण भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े और बढ़–चढ़ कर भाग लेने लगे। क्रान्तिकारी पं. गेंदालाल जी ने इसी समय शिवाजी समिति के नाम से डाकुओं का एक महत्वपूर्ण संगठन भी बनाया और शिवाजी की भाँति छापामार (गुरिल्ला) युद्ध करके अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध उत्तर भारत में एक सुनियोजित अभियान प्रारम्भ किया, और एक युवा वर्ग के क्रान्तिकारियों का भी संगठन खड़ा किया। किन्तु दल के ही एक सदस्य दलपतसिंह की मुखबिरी के कारण पं. गेंदालाल दीक्षित जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें पहले ग्वालियर लाया गया फिर वहाँ से आगरा के किले में कैद करके अंग्रेजी सेना की कठोर निगरानी में रख दिया गया।

पं. राम प्रसाद बिस्मिल से विमर्श

पं. राम प्रसाद बिस्मिल ने आगरा के किले में गुप्त रूप से आकर पं. गेंदालाल दीक्षित जी से मुलाकात की और संस्कृत भाषा में सारा वार्तालाप किया और आगे की रणनीति गुप्तरूप से निर्धारित की, जिसे अंग्रेज पुलिस पहरेदार बिल्कुल नहीं समझ पाये। अगले दिन दीक्षित जी ने योजनाबद्ध तरीके से कुछ गूढ़ रहस्य की बातें पुलिस गुप्तचरों से बतलाने की इच्छा जाहिर की। उच्च अंग्रेज अधिकारियों की अनुमति लेकर आपको आगरा से मैनपुरी जनपद की जेल में गोपनीय रूप से भेज दिया गया, जहाँ पर पं. राम प्रसाद 'बिस्मिल' की संस्था मातृवेदी के कुछ क्रान्तिकारी नवयुवक साथी पहले से ही मैनपुरी जनपद जेल में बन्द थे।

मैनपुरी काण्ड के सूत्रधार

मैनपुरी जनपद जेल में पहुँचते ही 'दीक्षित' जी ने एकदम अपना पैंतरा बदला और जनपद जेल की अंग्रेज पुलिस एवं पुलिस अधिकारियों को रोबदार बड़े ही कठोर शब्दों में डाँटकर कहा कि इन लड़कों को क्या पता, मैं इस काण्ड का सारा भेद जानता हूँ। अंग्रेज पुलिस यकायक उनके झाँसे में आ गयी और गेंदा लाल जी को उन लड़कों के साथ ही शामिल कर लिया गया। विधिवत् कानूनी चार्जशीट तैयार की गयी और और मैनपुरी जनपद के स्पेशल मैजिस्ट्रेट बी.एस. क्रिस की अदालत में पं. गेंदालाल दीक्षित सहित सभी नवयुवकों पर तत्कालीन सम्राट् की हत्या करने की साजिश रचने का मुकदमा दायर करके अदालत के आदेश पर मैनपुरी की जेल में डाल दिया गया। इस मुकदमें को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में ''मैनपुरी काण्ड'' के नाम से जाना जाता है।

गया। इस मुकदमें को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में 'मैनपुरी काण्ड' के नाम से जाना जाता है।

शातिर फरार

पं. गेंदालाल दीक्षित जी ने मुकदमे के दौरान एक और रहस्यमय गूढ़ चाल चली और जेल के बड़े जेलर से कहा कि सरकारी गवाह से उनके दोस्ताना ताल्लुकात हैं। अतः यदि दोनों को एक ही बैरक में रख दिया जाये तो कुछ और षड्यन्त्रकारी गिरफ्त में आ सकते हैं। मैनपुरी जेल के जेलर ने पं. गेंदालाल दीक्षित जी की बात का अटूट विश्वास करके सी.आई.डी. की निगरानी में सरकारी गवाहों के साथ हवालात में भेज दिया। वहाँ तैनात थानेदार ने एहतियात के तौर पर दीक्षित जी को एक सरकारी गवाह के साथ आपस में एक ही मजबूत हथकड़ी और बेड़ी में कस दिया जिससे कि पं. गेंदालाल दीक्षित जी रात अथवा दिन में हवालात से किसी भी तरह भाग न सकें। किन्तु गेंदालाल जी ने वहाँ भी सबको धता दे दी और चकमा दे कर रातों–रात हवालात से भाग निकले। इतना ही नहीं, अपने साथ–साथ लॉक–अप में बन्द उस सरकारी गवाह रामनारायण को भी उड़ा ले गये जिसका हाथ उनके हाथ के साथ हथकड़ी और बेड़ी से कसकर जकड़ दिया गया था। किंकर्तव्यविमूढ सारे जनपद के अधिकारी, (सी.आई.डी., प्रशासन और पुलिस वाले) उनकी इस बहादुरी पूर्ण हरकत को देख हाथ मलते रह गये।

दुखद अन्त

पं. गेंदालाल दीक्षित जी के लगभग 16 वर्ष की आयु से ही राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत होने के कारण स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति अहर्निश कार्य करने व एक क्षण भी विश्राम न करने के कारण उनको भयानक क्षय रोग हो गया। धनाभाव के कारण परिवार वालों ने गेंदालाल जी को किसी तरह दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया। जहाँ उन्होंने अन्न–जल, दवा का परित्याग कर दिया। फलस्वरूप पं. गेंदा लाल दीक्षितजी ने 21 दिसम्बर 1920 अपराह्न 2 बजे अन्तिम स्वॉस के साथ अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये।

डा. मधुसूदन दीक्षित एडवोकेट
सामाजिक चिन्तक, विचारक, शिक्षाविद
प्रपौत्र क्रान्तिकारी–पं. गेंदालाल दीक्षित
मो.: 9415007402, 9415337469, 9889259902
9415014902, 9453454649, 9453454447
9839061056, 9839099779

■■■

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. **Name of Member: .....**
2. **Age: .....**
3. **Gotra: .....**
4. **Father's/Husband'sName :.....**
5. **Address : .....**

   .....
6. **landline/Mobile No.: .....**
7. **Email : .....**
8. **Name of spouse / Father'sName :.....**
9. **Education : .....**
10. **Occupation(Post / Designation) :.....**

Unmarried Children Name Age Education Job

a) **.....**

b) **.....**

c) **.....**

11. **Any other information :**

I want to become life member of Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi **Sabha & / or Kanyakubj Vaani** and Willing to pay Rs.....in Cash/Cheque No. .....Name of Bank.....favouring *"Akil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratindhi Sabha, Lucknow"Payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing : .....**

Date : **(Signature)**

.....✂.....✂.....✂.....

Reciept

Reveived with thanks Rs. .....in Cash / Cheque No. .....Name of Bank ..... from .....who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinibhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani.**

(Signature)

1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha is Rs. 500/- (A/c. No. 20036640960, Ifsc Code- ALLA0210062 Allahabad Bank Main Branch, Hazratganj, Lucknow). Form With This Cheque To Be Sent To Shri Upendra Mishra 4/53 Vishal Khand Gomti Nagar Lucknow.226010.**
2. Contribution for life membership of **Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/- (A/c. No. 710601010023908, IFSC Code- VJB0007106, Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj Lucknow.**
3. Contribution forone issueof **Kanyakubja Vaani is Rs.40/-+ postage charges.**

ॐ श्री गुरु देवाय नमः

With best Compliments from:.....

SHREE GURU KRIPA ASSOCIATES

Arch.& Construction Designer

Designing & Construction
Labour Rate with Material

Contact for :
9415580950
7754929415

Add.: Near Krishna Vihar Colony Gate,
Raibareli Road, Lucknow.

साइकिल व पारितोषिक पानेवाली छात्राएं

मुख्य अतिथि डॉ. राजीव शर्मा को स्मृति चिह्न देते अध्यक्ष न्या0 मू0 श्री डी.के. त्रिवेदी

दीपावली की संध्या पर सरहद पर शहीद हुए सैनिकों और उनके परिवार के नाम दीप-प्रज्ज्वलन- सेक्टर 18 इन्दिरा नगर लखनऊ

खादी भारत
Khadi India

मेघदूत

अब मधुमेह की वजह से जिन्दगी के साथ समझौता नहीं!

मधुशून्य चूर्ण

आयुर्वेदिक औषधि

- ✓ मधुमेह को कन्ट्रोल करने में सहायक।
- ✓ शरीर को नवस्फूर्ति प्रदान करता है।
- ✓ हृदय दुर्बलता को नियन्त्रित करता है।

Dosage as directed by the physician

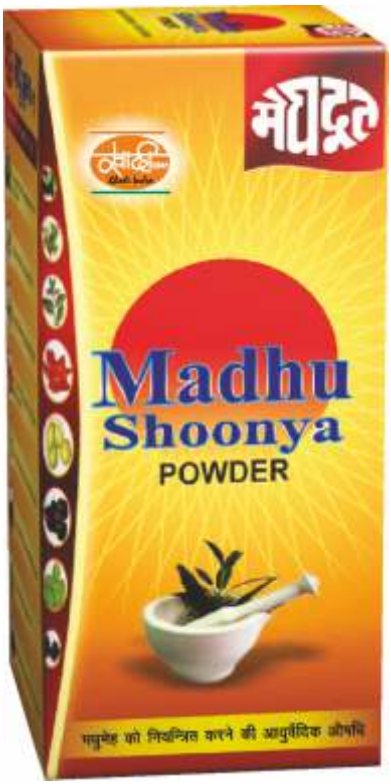

- करेला
- तुलसी
- अश्वगन्धा
- विजयसार
- नीम
- जामुन
- गुणमार
- शिलाजीत

9235623142 info@meghdootherbal.com /meghdootherbal